अप्रैल-2014 ◆ वर्ष 2 ◆ अंक 11 ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

अप्रैल-२०१४

रङ्गभेद बेकार की बातें
दयानन्द का है संदेश
है मानस की जात हित
चाहे देश-विदेश

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० २८

शुद्धता, गुणवत्ता, उत्तमता के प्रतीक
MDH
Chunky Chat
masala
Garam
masala
Sambhar
masala
Shahi Paneer
masala
DEGGI MIRCH
Kitchen
King
Peacock
Kasoori
Methi
Pav Bhaji
masala
Dal Makhani
masala
Chana
masala
MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
ESTD. 1919
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११५
फाल्गुन शुक्ल सप्तमी
विक्रम संवत्
२०७१
दयानन्दाब्द
१९०

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

मनन करें और मतदान करें

April - 2014

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन
३५०० रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २२

हलचल २३

०४	वेद सुधा
०६	भव्यतम मकान पर टायर की शान
११	सत्यार्थप्रकाश पहेली-३
१२	पृथ्वी से परे बुद्धिपूर्ण जीवन
१३	हिन्दुओं के साथ एक धोखा
१५	राजनीति और धर्म
१७	'वेद और सत्यार्थ प्रकाश'
२०	महाभारतकालीन विमान मिला
२१	अविद्या और विद्या
२४	लौट आओ नन्ही गौरैया
२७	गृहस्थाश्रम-वैदिक स्वर्ग की झाँकी
२८	अलसी-प्रकृति का वरदान
३०	कथा सरित

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - २ अंक - ११

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.)
११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ९३१४५३५३७९, ९८२९०९३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित, तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

ओ३म्

वेद सुधा

आदारो वां मतीनां नासत्या मतवचसा।
पातं सोमस्य धृष्णुया।। -ऋग्वेद १/४६/५

प्रस्तुत वेदमंत्र में प्राण साधना से सोम रक्षण की प्रेरणा की गई है। इससे मन पवित्र होता है, उसमें सत्य का निवास होता है। ज्ञान निर्मल होकर वचन सोच पूर्वक बोले जाते हैं। सुरक्षित सोम वासना रूपी शत्रुओं का नष्ट करता जिससे मनुष्य निरोग होता है, उसकी बुद्धि तीव्र होकर सूक्ष्म से सूक्ष्म विषय को भी ग्रहण करने में समर्थ होती है। हम प्राण साधना कर सोम का रक्षण करें और उसके विविध लाभों से जीवन को समुन्नत बनाएँ।

प्रकृति हमारी आवश्यकता के लिये पर्याप्त है, हर एक के लालच के लिये नहीं।
(Nature has enough for need, not for every body's greed.)

त्वमग्ने वसूँरिह रुद्राँ आदित्याँ उत।
यजा स्वध्वरं जनं मनुजातं धृतप्रुषम्।। -ऋग्वेद १/४५/१

प्रस्तुत वेदमंत्र में वसु, रुद्र, आदित्य, स्वध्वर आदि विशिष्ट व्यक्तियों के सम्पर्क में रहने की प्रेरणा की गई है। प्रथम, मध्यम, उत्तम कोटि के ब्रह्मचर्य का पालन कर सब ज्ञानों उत्तमताओं को ग्रहण करने वाले, अहिंसात्मक कर्मों को करने वाले, अपनी शक्तियों का विकास करने वाले, सदा ज्ञान में प्रवृत्त रहने वाले, अपने मन की निर्मलता तथा ज्ञान की दीप्ति से सबको स्निग्ध और पूरित करने वाले व्यक्तियों के सम्पर्क में रहने से काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि वासनाओं को विनष्ट कर उत्तम बना जा सकता है।
हम उक्त विशिष्ट व्यक्तियों के सम्पर्क में आकर वैसा ही बनने का प्रयत्न करें।

अपना महत्व समझ कर उसके अनुरूप बनें।
(Understand your importance and be according it.)

सवितारमुषसमश्विना भगमग्निं व्युष्टिषु क्षपः।
कण्वासस्त्वा सुतसोमास इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर।। -ऋग्वेद १/४४/८

प्रस्तुत वेदमंत्र में सविता, उषा, अश्विनौ (प्राण साधना), भग (ऐश्वर्य), अग्नि आदि देवों की पूजा कर मेधावी व सोमशक्ति के रक्षक बनने की प्रेरणा की गई है। सूर्य से क्रियाशीलता की दीक्षा ले वासनाओं से बच सूर्य सम चमकें, उषा से अपने अज्ञान के अंधकार को दूर करने की प्रेरणा लें, प्राण साधना से शरीर व मन स्वस्थ-निर्मल बनाऐं, सांसारिक यात्रा के लिये केवल आवश्यक ऐश्वर्य जुटाऐं, अग्नि से प्रकाश एवं आगे बढ़ने की प्रेरणा लें, सोम शक्ति की रक्षा कर मेधावी बनें तभी प्रभु दर्शन कर सकेंगे। हम देवों से सत्प्रेरणा लें, सोमशक्ति की रक्षा कर मेधावी बन प्रभु दर्शन के पात्र बनें।

कर्तव्य का निष्ठा से पालन करना ही धर्म है।
(To obey the duty with faith is religion.)

त्रिवन्धुरेण त्रिवृता सुदेशसा रथेना यातमश्विना।
कण्वासो वां ब्रह्म कृण्वन्त्यध्वरे तेषां सु शृणुतं हवम्।। -ऋग्वेद १/४७/२

प्रस्तुत वेदमंत्र में प्राण साधना से जीवन यज्ञमय बनाने की प्रेरणा की गई है। प्राण साधना से शरीर रूपी रथ में इन्द्रियाँ (घोड़े), मन (लगाम), बुद्धि (सारथि) तीनों सुन्दर बनते हैं। मानस वृत्ति धर्मपूर्वक धन कमाने व उत्तम आनन्दों को प्राप्त करने की बनी रहती है जिससे नीरोगता और उत्तम स्वास्थ्य से शरीर सुन्दर बना रहता है। मेधावी व्यक्ति प्राणापान की महिमा का गायन करते उनकी साधना में प्रवृत्त होते हैं। परमात्मा ऐसे उपासकों के जीवनों को यज्ञमय बनाने में सहायक होते हैं। हम शरीर रक्षण-पोषण के लिए कोई क्रूर या अनुचित कर्म न करें, प्राण साधना से जीवन को यज्ञमय बनाऐं।

अपव्यय और फैशनपरस्ती क्षुद्रता है।
(Wastage and fashionableness is mean mentality.)

अभूदु भा उ अंशवे हिरण्यं प्रति सूर्यः।
व्यख्यज्जिह्वयासितः।। -ऋग्वेद १/४६/१०

प्रस्तुत वेदमंत्र में ज्ञान-प्राप्ति व ब्रह्म-दर्शन का अधिकारी बनने की प्रेरणा की गई है। ज्ञान की प्राप्ति का सर्व प्रथम साधन बाँटकर खाना है। असुर स्वयं सारा खा जाते हैं। वह ज्ञान प्राप्त नहीं कर पाते। देव बाँट कर खाते हैं इसलिये उन्हीं को ज्ञान ज्योति प्राप्त होती है। जो सूर्य की भाँति निष्काम भाव से अपने नियत कर्त्तव्य कर्मों के पालन में क्रियाशील रहते हैं, कभी अकर्मण्य नहीं होते और जिह्वा के स्वाद में न फँस कर व्यवसनों से ऊपर उठते हैं वे ही प्रभु के प्रकाश को देख पाते हैं। हम यज्ञ-शेष का सेवन करें, निष्काम भाव से कर्त्तव्य कर्म करें, जितेन्द्रिय बन विनय पूर्वक आचार्य के चरणों में बैठकर ज्ञान-विज्ञान को प्राप्त कर प्रभु दर्शन के अधिकारी बनें।

कार्य पूजा ही नहीं पारितोषिक भी है।
(Work is not only worship but prize also.)

या नः पीपरदश्विना ज्योतिष्मती तमस्तिरः।
तामस्मे रासाथामिषम्।। -ऋग्वेद १/४६/६

प्रस्तुत वेदमंत्र में सात्विक अन्न का सेवन करने की प्रेरणा की गई है। सात्विक अन्न वह होता है जो परिश्रम, नीति और ईमानदारी से अर्जित किया जाता है। उससे वासनाएँ उत्पन्न नहीं होतीं। अन्तःकरण शुद्ध होता है। बुद्धि सात्विक और ज्योतिर्मय बनती है। सभी प्रकार के अज्ञान का अन्धेरा दूर होकर प्रकाश ही प्रकाश हो जाता है। सदैव स्मरण रखें- जैसा अन्न खायेंगे वैसा ही मन बनेगा।

हम सात्विक अन्न का सेवन कर बुद्धि को प्रकाशित करें।

वास्तविक प्रेम में स्वार्थ की भावना नहीं होती।
(Real love has no selfish feeling.)

महेश चन्द्र गर्ग, सासनी

❑❑❑

आत्म निवेदन

भव्यतम उस पर की शान

आप जरा किसी नवनिर्मित कॉलोनी में एक चक्कर लगावें। एक से एक शानदार मकान आपको दिखेंगे। वस्तुतः उपलब्ध संसाधनों के आधार पर प्रत्येक मनुष्य सबमें अलग दिखे ऐसा मकान बनाना चाहता है, जिसे देख बार-बार 'वाह' निकल पड़े। परन्तु एक और सामान्य चीज आपको दिखेगी वह यह कि प्रायः प्रत्येक भवन के ऊपर एक काला टायर लटका नजर आयेगा। जैसे मखमल में टाट का पैबन्द हो। विचारणीय है कि इस कुदृश्य को क्यों लगाया जाता है? उत्तर यह मिलता है कि 'नजर न लग जावे'- इसलिए। लीजिए साहब! मकानों को भी नजर लगने लगी। यह कुछ ऐसा ही है जैसे आज से ५०-६० वर्ष पूर्व तक बच्चों के नाम कालिया, घसीटा इत्यादि इस कारण रखे जाते थे कि उनको नजर न लगे। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रवर्तित 'सुन्दर-सारगर्भित-नामकरण-क्रान्ति' के पश्चात् आज एक से एक सुन्दर नाम रखे जाते हैं। परन्तु आज बालकों की औसत आयु बढ़ी ही है। अतः नजर का लगना, व्यर्थ का भय है। वस्तुतः बचपन से ही हमारे भीतर ऐसे संस्कार प्रविष्ट हो जाते हैं कि अनिष्ट की आशंका से सदैव भयभीत हम, हर उस बात को अपनाने के लिए उद्यत हो जाते हैं जो त्राण देने वाली बतायी जाती है, चाहे वह

कितनी भी हास्यास्पद अथवा मूर्खतापूर्ण क्यों न हो। हम पढ़ लिख कितना भी गए हों पर स्थिति यह है कि जीवन का हर क्षण अन्धविश्वासों के शिकंजे में है। वास्तुशास्त्र के नाम पर हम ऐसी ही अनेक मान्यताओं के जाल में जकड़े हैं। हमारे एक प्रोफेसर मित्र हैं। वे वास्तुशास्त्र के आधार पर सम्पूर्ण दोष निवारण के चक्कर में एक वर्ष तक तो भवन का नक्शा ही तैयार नहीं कर पाये। बनने के बाद भी बदलाव किए। विशेष कोण में 'स्टडी रूम' बनवाने पर भी बेटा आई.आई.टी. में प्रवेश नहीं ले सका।

वस्तुतः वास्तुशास्त्र का जितना पक्ष भवन निर्माण में वातानुकूलन, वायु प्रवेश, सम्पूर्ण शाला में यथेष्ठ प्रकाश हेतु दिशाओं का चयन कर द्वार, खिड़कियों का निर्माण, सुगन्ध, सुन्दरता, सुदृढ़ता, नयनाभिरामता(समचौरसता आदि), यथायोग्य परिणामयुक्तता आदि से संबंधित है वही वस्तुतः वास्तुशास्त्र है, वह अत्यावश्यक है। परन्तु ऐसे निर्देश कि पढ़ने का कमरा विशेष दिशा में रखने से बच्चे परीक्षा में अच्छे परिणाम लायेंगे अथवा विशेष कोने में सोने से जिनका विवाह नहीं हो पा रहा हो उनका विवाह हो जावेगा, मूर्खतापूर्ण ही नहीं संपूर्ण बौद्धिक विनाश के जनक तथा पुरुषार्थ की हत्या करने की प्रेरणा देने वाले हैं। ऐसे काम हमारे विचार में सामाजिक अपराध की कोटि में आते हैं। ऐसे बौद्धिक विनाशकर्ता को निश्चित सजा मिलनी चाहिए।

देखिए ऐसे दो दावे ऐसे ही वास्तुशास्त्रों में दृष्टव्य हैं-

१. एक सज्जन के यहाँ लाख प्रयत्न करने के बाद भी उसके बच्चे के नम्बर ६० प्रतिशत से ज्यादा नहीं आ रहे थे। सिर्फ बच्चे के पढ़ने के स्थान को बदलने मात्र से अब ८० प्रतिशत से ज्यादा नम्बर आ रहे हैं। ईशान दिशा सही होना बच्चों के पूर्ण विकास के लिये अत्यन्त आवश्यक है। कमजोर बच्चों को विशेषकर ईशान दिशा वाले कक्ष में पढ़ाई की व्यवस्था करायें तो आप खुद आश्चर्यजनक परिणाम देखेंगे ऐसा संभव ना हो तो घर के पश्चिम दिशा वाले कमरे में उन्हें पूर्वमुखी होकर पढ़ायें, वांछित परिणाम निकलने लगेंगे।

२. अविवाहित युवक हो या युवती जिसका विवाह नहीं हो रहा है और अनेक बाधाएँ आ रही हैं, उन्हें घर के नैऋत्य कोण अर्थात् दक्षिण-पश्चिम दिशा वाले कोण में सोना चाहिए, इससे शीघ्र विवाह योग बनेंगे। यदि किसी परिवार में अलग से कमरा न हो तो वह नैऋत्य कोण वाली जगह में सोएँ और लाभ पाएँ।

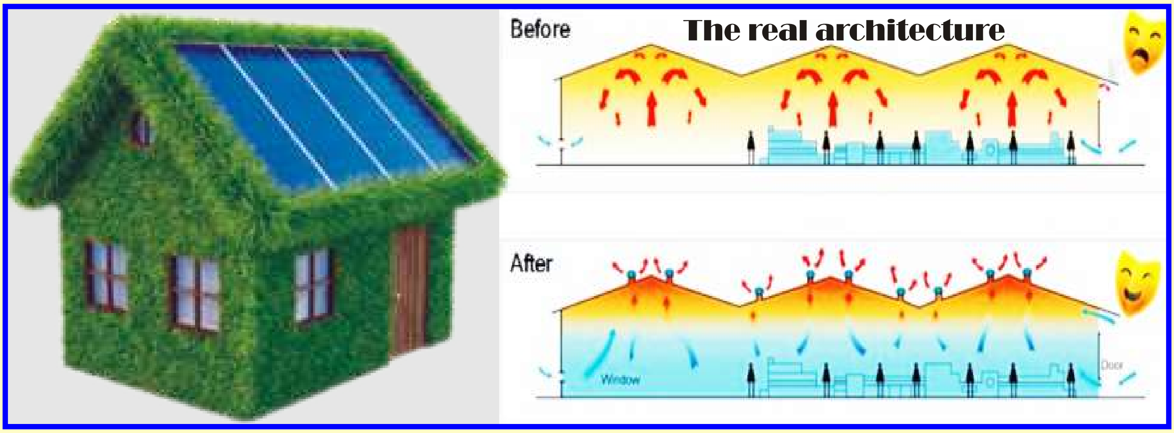

अपने को authentic बताने के लिए वास्तुशास्त्र की साइट्स पर वेदादिशास्त्रों के समर्थन की बात कही जाती है।
हम प्राचीन शास्त्रों के नाम पर मनगढ़न्त बातें बना स्वार्थ सिद्धि में लगे हुए हैं। जैसे दावे ये तथाकथित वास्तुशास्त्री करते हैं वेदादि शास्त्रों में वैसा कुछ नहीं है। वस्तुतः ऐसी परिपाटी बन गयी है कि संस्कृत में जो कुछ कह दिया जाता है उसे वेदवाक्य समझ लिया जाता है।
सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. सम्पूर्णानन्द जी ने अपने ग्रन्थ 'ब्राह्मण सावधान' में एक वास्तविक घटना लिखी है।
एक सायं काशी के कोई महामहोपाध्याय पदवी वाले पण्डे जी उनसे भेंट करने आये। पर्याप्त समय तक वार्ता चली अन्ततः पण्डे जी ने विदा चाही। जाते-जाते लघुशंका की इच्छा भी जाहिर की। गृहपति के द्वारा बताये स्थान की ओर जाने लगे, पता नहीं उस समय सम्पूर्णानन्द जी को क्या सूझा, यकायक यह श्लोक उच्च स्वर में निकल गया 'लघुशंका न कर्त्तव्या सायं प्रातर्जनाधिप' (सायं तथा प्रातः लघुशंका नहीं करनी चाहिए) इस श्लोकांश को सुनते ही पण्डे जी के मानो पाँव तले धरती चिपक गयी। कान पर चढ़ाया जनेऊ उतार कर घर जाने को उद्यत हुये। इस पर मंद-मंद मुस्कराते हुये सम्पूर्णानन्द जी ने श्लोक का उत्तरार्द्ध भी सुना दिया 'अवश्यमेव नरके वासो भवति इति शुश्रुम' (सायं प्रातः लघुशंका करने वाले को अवश्य ही नरकवास मिलता है, ऐसा हमने सुना है) यह सुनकर तो धर्मभीरु पण्डे के पाँवो तले जमीन ही खिसक गयी। वे जब जाने लगे तो सम्पूर्णानन्द ने उन्हें आश्वस्त किया कि ये श्लोक स्वनिर्मित था। उन्होंने इसलिए उच्चारित किया ताकि वे जान सकें कि महामहोपाध्याय उपाधिधारी पंडित भी मात्र 'बाबावाक्यं प्रमाणम्' को मानने वाले हैं।
महर्षि दयानन्द जी महाराज ने संस्कार विधि में 'शाला निर्माण' के संदर्भ में जिन वेद मंत्रों को उद्धृत किया है उनके भाष्य में वास्तुशास्त्र के सही स्वरूप का दिग्दर्शन होता है। कुछ बिन्दु पाठकों के चिन्तन हेतु ऋषि-भाष्य में से प्रस्तुत हैं।
१. (घर) सब प्रकार की उत्तम उपमायुक्त कि जिसको देखके विद्वान् लोग सराहना करें।
२. वह शाला चारों ओर के परिमाण से समचौरस हो।
३. उसके (शाला के) बन्धन और चिनाई दृढ़ हो।
४. शाला के चारों ओर स्थान शुद्ध हो।
५. शाला में सूर्य का प्रतिभास आवे।
६. उस घर का विशेषमान परिमाणयुक्त लम्बी, ऊँची छत और भीतर का प्रसार विस्तारयुक्त होवे।
७. सब ऋतुओं में सुख देने वाली हो(यह बिन्दु शिल्पी के अनुभव व योग्यता को इंगित करता है।)
८. चारों ओर का शुद्ध वायु आवे, अशुद्ध वायु निकलता रहे।
यह है विशुद्ध वास्तुशास्त्र का संकेतात्मक स्वरूप जो वेदादि शास्त्रों में मिलता है। वहाँ अविश्वसनीय दावों का कोई स्थान नहीं है। वस्तुतः शिल्पी के समक्ष यही चुनौती होनी चाहिए कि उसकी ड्राइंग में द्वारादि की दिशा तदनुरूप हो ताकि उक्त अभीष्ट की प्राप्ति हो सके।
वेद में 'वास्तोष्पते' (ऋ.मं.७ सूक्त ५४) में तथाकथित वास्तुशास्त्र के खोजने वाले जान लें कि वहाँ 'वास्तोष्पते' से गृह के रक्षकरूप में परमपिता परमात्मा ही अभिप्रेत है। निठल्लों को धन प्राप्त कराने हेतु कोण निर्धारण का विवरण नहीं है। ईकोफ्रेन्डली भवन बनाना ही सच्ची वास्तु कला है। अस्तु।

अशोक आर्य
०९००१३३९८३६, ०९३१४२३५१०१

राष्ट्रोत्थान के लिए तेरह सूत्रीय कार्यक्रम

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

① देश से सभी प्रकार का वर्ग भेद मिटाकर शिक्षा को सर्वोच्च स्तर तक ले जाने हेतु सम्पूर्ण देश में प्राथमिक से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक आवासीय व अनिवार्य शिक्षा पूर्णतः निःशुल्क होवे। इस व्यवस्था के अतिरिक्त किसी भी सम्पन्न सशक्त व्यक्ति के लिए कोई अतिरिक्त निजी वा सरकारी व्यवस्था नहीं हो। सब छात्रों को समान भोजन, वस्त्र, पाठ्यक्रम आदि सभी सुविधाएँ समान हों। इससे सभी प्रकार के साम्प्रदायिक, सामाजिक, आर्थिक भेदभाव दूर होकर सबको शिक्षा का समान अवसर प्राप्त होगा। तब देश में आरक्षण की जो आग इस राजनीति ने लगायी है उसे सदैव के लिए समाप्त कर दिया जाए। सभी प्रकार के जाति, मजहब, लिंग आदि के नाम पर बने आयोगों को तत्काल समाप्त किया जाये व जातीय संगठनों पर प्रतिबन्ध लगे। आज भारत का कोई भी विश्वविद्यालय विश्वस्तरीय नहीं है, यह लज्जा का विषय है। देश में अनुसंधान की प्रवृत्ति को प्रोत्साहन देते हुए प्राचीन भारतीय ज्ञान-विज्ञान पर भी गम्भीर अनुसंधान, भारतीय गौरवमय इतिहास, नैतिकता आदि का उच्च स्तरीय समावेश हो। देवता स्वरूप श्री लाल बहादुर जी शास्त्री के'जय जवान जय किसान' नारे के साथ श्री अटलविहारी वाजपेयी जी का 'जय विज्ञान' नारा साकार हो। इस बृहत्कार्य के लिए बजट बड़ी-२ कम्पनीयों को दिए जाने वाला अनुदान बंद करके जुटाया जा सकता है। साथ ही बिजली पानी आदि पर अनुदानों की भिक्षा को बन्द करना चाहिए। प्राथमिक शिक्षा का माध्यम क्षेत्रीय भारतीय भाषा तथा आगे की सम्पूर्ण शिक्षा राष्ट्रभाषा हिन्दी में होनी चाहिए। जब फ्रांस, चीन, जापान आदि अनेक देश अपनी भाषा में विज्ञान आदि सभी की शिक्षा दे सकते हैं तो भारत इतनी दीन-हीन व दास मनोवृत्ति का क्यों है, जो अपनी राष्ट्र भाषा को छोड़कर विदेशी अंग्रेजी भाषा को ही प्रधानता दे रहा है? देश में संस्कृत भाषा जो विश्व की सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा है, को सर्वोच्च स्थान मिलना चाहिए।

② सुरक्षा किसी भी देश के लिए महत्वपूर्ण है। आज सेना में हजारों पद रिक्त हैं। अस्त्र-शस्त्रों की मात्रा व गुणवत्ता में भी भारी कमी है। इस कारण रक्षा बजट में वृद्धि करके तथा सेना को पर्याप्त अधिकार देकर, रक्षा वैज्ञानिकों को सभी संसाधन उपलब्ध कराके, सैनिकों के वेतन भत्तों को पर्याप्त बढ़ाकर भारतीय सेना को विश्व में श्रेष्ठतम बनाया जा सकता है। हमारे देश की सेना के जीते हुए युद्धों को सदैव भारतीय नेताओं ने ही टेबल पर हारा है, यह पाप नहीं होना चाहिए।

③ देश में सबको भोजन देने वाला किसान सबसे अधिक भूखा व नंगा है। आज उसे निःशुल्क बिजली आदि की नहीं बल्कि पर्याप्त विद्युत् व सिंचाई हेतु पानी की आवश्यकता है। विद्युत् व जल की उचित दर पर पर्याप्त उपलब्धता हेतु भारत की सभी नदियों को जोड़ने का भी श्री वाजपेयी जी का स्वप्न साकार करने की आवश्यकता है। छोटे-२ तालाब, बाँध, नहरों आदि के निर्माण तथा वर्षा के बूँद-२ जल को रोकने आदि से पानी की उपलब्धता हो सकती है। सौरविद्युत्, पवन विद्युत्, जल विद्युत् आदि पर विशेष ध्यान देकर व अनुसंधान करके देश में विद्युत् उत्पादन बढ़ाने का प्रयत्न होना चाहिए। रासायनिक खाद के स्थान पर जैवखाद आदि पर विशेष अनुसंधान होना चाहिए ताकि स्वास्थ्यवर्धक अन्न उत्पन्न हो सके। अन्नादि के भण्डारण की पूर्ण व्यवस्था आवश्यक है। किसानों के उत्पादों का मूल्य उनसे परामर्श करके उनके लागत आदि का पर्याप्त मंथन करके ही तय करनी चाहिए, जिससे किसान सुखी व समृद्ध कहला सकें। उनकी सभी फसलों का बीमा होना चाहिए।

④ शहर व कस्बों में निःशुल्क पेयजल वा सस्ती बिजली पर धन लुटाना देश के व्यापक हित में नहीं है। इसके स्थान पर यह सुनिश्चित होना चाहिए कि प्रत्येक घर में बिजली व पानी पर्याप्त मात्रा में पहुँचे। पानी शुद्ध व स्वास्थ्यकर होवे। गाँवों में शुद्ध पानी निःशुल्क मिले।

⑤ देश में शिक्षा की भाँति प्रत्येक नागरिक को पूर्णतः निःशुल्क चिकित्सा बिना किसी भेदभाव के समान स्तर की उपलब्ध होवे, जिससे चिकित्सा के अभाव में कोई कष्ट न पावे। आज निर्धन व्यक्ति महंगी चिकित्सा नहीं करा पाते जबकि धनी विदेशों में जाकर चिकित्सा कराते हैं। आयुर्वेद, प्राकृतिक व यौगिक चिकित्सा को प्रोत्साहन मिले। स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सभी पदार्थों (नशीले पदार्थ, मांस, अण्डा आदि) पर प्रतिबन्ध लगे। अपने नागरिकों को नशीले पदार्थ खिलाकर उन्हें रोगी, अपराधी बनाकर अथवा अकाल मृत्यु में भेजकर राजस्व जुटाना उन पर डाका डालने के समान अपराध है। इनसे उत्पन्न दुष्परिणामों से धन, चरित्र आदि का भी नाश होता है। देश में फल, शाक, दूध, अन्न आदि के सेवन को प्रोत्साहन मिले। ब्रह्मचर्य, संयमित जीवन की प्रेरणा मिले, जिससे विभिन्न यौन रोग आदि दुःखों से बचा जा सके।

⑥ मनोरंजन व खेल के नाम पर भारी अपव्यय रोककर इस धन को उपर्युक्त कार्यों में उपयोग में लाया जाये। मनोरंजन के नाम पर उन्मुक्त यौनाचार वा अश्लीलता से बलात्कार आदि की घटनाओं में वृद्धि करके फिर बलात्कारी को दण्ड देने हेतु प्रदर्शन, धरना आदि के प्रयोजन नाटक मात्र हैं।

⑦ देश के युवकों को अनुदान नहीं बल्कि आत्मनिर्भरता (रोजगार) चाहिए। पर्यावरण के अनुकूल उद्योग व कृषि को प्रधानता मिले।

⑧ देश से पशुवध पूर्णतः बन्द हो तभी यह देश गाँधी जी की अहिंसा का नाम लेने का अधिकारी होगा। क्रूर हिंसा द्वारा उत्पन्न मांस बेचकर राजस्व भरना, लोगों में क्रूर भावनायें भरना भीषण अपराध है। आश्चर्य है कि बैल पर एक सीमा से अधिक बोझा लादना पशु क्रूरता निवारण अधिनियम का उल्लंघन अर्थात् कानूनी अपराध है परन्तु पशुओं को क्रूरता से लाखों की संख्या में मारना कोई अपराध नहीं। हिंसक बाघ मारना अपराध और अमृत समान दूध देने वाली गाय को मारना कोई अपराध नहीं। यह किस सिरफिरे की सोच है?

⑨ अपने देश के प्रति द्वेष तथा पाकिस्तान आदि विदेशों के प्रति सहानुभूति रखने वालों के सभी नागरिक अधिकार समाप्त किये जाने चाहिए। सभी सम्प्रदाय के ग्रन्थों की समीक्षा की जाये कि उनमें कोई ऐसी बातें तो नहीं हैं जो आतंकवाद, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, अंधविश्वासों को बढ़ाती हैं। यदि हैं तो उन्हें निकालने का दृढ़ प्रयास होवे।

⑩ 'आप' का जनलोकपाल विवेकपूर्ण संशोधनों के साथ पारित होवे साथ ही रिश्वत देने वाले को भी सजा का प्रावधान होवे। इस सबसे पूर्व जन जागरण के द्वारा जनता को भी सचेत किया जाये। कई बार जनता ही नेताओं वा अधिकारियों से अवैध कार्य कराकर भ्रष्ट बनाने को प्रोत्साहित करती है। यह हमारा निकट का अनुभव है। जब तक देश में नैतिकता, देशभक्ति की भावना नहीं होगी, तब तक भ्रष्टाचार केवल कानून के द्वारा पूर्णतः समाप्त नहीं किया जा सकता।

⑪ उपर्युक्त बड़ी-बड़ी योजनाओं के लिए राजस्व जुटाने हेतु भ्रष्ट लोगों द्वारा विदेशों में जमा धन वापिस लाया जाये। आवश्यक हो तो करों को व्यवस्थित वा बढ़ाया जाये। अपव्यय को रोका जाये। जब पाँच वर्ष से लेकर लगभग २५वर्ष तक की पीढ़ी जो अनिवार्य रूप से विद्यालयों में ही रहेगी, उनके भोजन, वस्त्र, चिकित्सा, शिक्षा सभी व्यय शासन वहन करेगा, तब करों का बढ़ाया जाना किसी को आपत्तिजनक नहीं लगेगा। कम से कम निर्धनों, मजदूरों, किसानों, मध्यम वर्ग, युवा वर्ग तो अत्यन्त सुखी होंगे। धनी वर्ग को भी कोई हानि नहीं होगी।

⑫ देश में विधायकों व सांसदों जो देश के नीति निर्धारक व निर्माता होते हैं, उनके लिए उच्च शैक्षणिक योग्यता व सच्चरित्रता का मानदण्ड अवश्य होना चाहिए। चोर, लुटेरे, हत्यारे, बलात्कारी एवं निरक्षर लोग कैसे देश हित में कोई कानून बना सकते हैं? आश्चर्य व दुर्भाग्य है कि चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के लिए भी न्यूनतम योग्यता का निर्धारण है परन्तु इन कर्णधारों के लिए कोई योग्यता नहीं।

⑬ विदेशी चन्दों से चल रहे सभी गैर सरकारी संगठनों पर विशेष ध्यान रखा जाये।

इन सभी व्यवस्थाओं से देश की प्रायः सभी बड़ी व गम्भीर समस्याओं का अन्त हो सकता है। हाँ, नेताओं को फूट डालकर राज्य करने का अवसर तथा देश को लूटकर बर्बाद करने का अवकाश अवश्य नहीं मिलेगा, तभी राजनीति शुद्ध रूप में प्रकाशित होगी और देश एक महाशक्ति बनकर उभर सकेगा।

अध्यक्ष, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास,
भागलभीम, भीनमाल, जिला-जालोर, दूरभाष- ०२९६९-२९२१०३, ०९४१४१८२१७३

श्री राम का राज्याभिषेक

प्राचीन भारतीय राजनीतिक परिदृश्य में आज का विद्यार्थी प्रायः यह समझ लेता है कि प्राचीन भारत में राजतंत्र ही था। हमारा ऐसा मानना है कि प्रमुख शासक का नाम 'राजा' होने मात्र से वो राजतंत्र अथवा एकतंत्र शासन नहीं बन जाता था। वेद में भी निर्देश है कि राजा का चयन समितियों और सभाओं द्वारा किया जाना चाहिए जिसमें राष्ट्र के सभी प्रतिनिधि उपस्थित हों। हाँ! इतना अवश्य है कि राजा सर्वश्रेष्ठ हो। इस बात की ओर बार-बार सचेत किया गया है। आप कहेंगे कि राजा का बेटा राजा होता था यह वंशवाद अथवा राजतंत्र नहीं है तो और क्या है? हमारा विनम्र उत्तर है कि जिस समय की चर्चा हम कर रहे हैं उस समय राजा के पुत्रों को अन्यों के साथ स्वतंत्र रूप से आगे बढ़ने का मौका मिलता था और जब वे सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होते थे केवल तभी वे शासक के पद पर आसीन हो सकते थे और इतना ही नहीं व्यवस्था यहाँ तक थी कि अगर कोई राजा प्रजापालन के अपने दायित्व से च्युत् होकर प्रजापीड़क बन जाए तो उसे शासक के पद से निश्चितरूपेण हटा दिया जाए। हम श्रीराम के राज्याभिषेक की बात करें तो वाल्मीकि रामायण के अयोध्या काण्ड के द्वितीय अध्याय में हम पाते हैं कि दशरथ ने राम के राज्याभिषेक के लिए सारी परिषद को बुलाकर उनसे अनुमोदन प्राप्त किया और राम के राज्याभिषेक का विचार उपस्थित करते हुए यह कहा कि 'यदि यह विचार मेरे अनुरूप और उचित हो तो आप मुझे अनुमति देवें अथवा मैं कैसे यह कार्य करूँ यह बतावें। (वाल्मीकि रामायण सर्ग २ श्लोक १५)

आगे कहा गया 'कि राजा दशरथ के भाव को भलीप्रकार से जानकर ब्राह्मणों व राजाओं ने नगर और राज्य के लोगों के साथ मिलकर विचार करके समान बुद्धि को प्राप्त हो मन से निश्चय करके महाबलवान रघुवीर राम को युवराज बना देखने की इच्छा प्रकट की। (सर्ग २ श्लोक १६ से २२) इस प्रकार अति संक्षेप में हम यह कहना चाहते हैं कि राम का राज्याभिषेक केवल दशरथ की कामना नहीं अपितु संपूर्ण अयोध्या के नागरिकों और अयोध्या के अधीन

आने वाले राजाओं की भी इच्छा थी। यह इच्छा क्यों थी? इसका सीधा-सीधा उत्तर है कि राम के गुण उन्हें निर्विवाद रूप से श्रेष्ठों में श्रेष्ठ महापुरुष के रूप में स्थापित करते थे। महर्षि वाल्मीकि ने अध्योध्या काण्ड के प्रथम सर्ग में ही श्रीराम के गुणों का वर्णन किया है। हम चाहेंगे कि आज के परिप्रेक्ष्य में शासन चक्र से जुड़े व शासन तंत्र पर बैठाने वाले सभी लोग इनका मनन करें।

१. वे राम नित्य ही शांत स्वभाव वाले और सदा नम्रतापूर्वक भाषण करने वाले थे। कठोर भाषण करने पर भी कठोर उत्तर नहीं देते थे।

२.श्रेष्ठात्मा राम किसी प्रकार किए गए एक भी उपकार से प्रसन्न होते थे और सैंकड़ों उपकारों को भी याद नहीं करते थे।

३. राम प्रियवादी और वीर्यवान होते हुए भी अपने महान् वीर्य से (शक्तिमत्ता से) विस्मृत नहीं थे। अर्थात् वे पूर्णतया अहंकार रहित थे।

४. राम झूठ बोलने वाले नहीं थे। विद्वान् वृद्धों की पूजा करके प्रजा से अनुरक्त थे। प्रजा भी उनसे प्रसन्न थी।

५. वे दया से युक्त, क्रोध को वश में रखने वाले, ब्राह्मणों विद्वानों के पूजक दीनों पर दया करने वाले, धर्म को जानने वाले, इन्द्रियों के निग्रह करने वाले और पवित्र थे।

६.वे बुरे कर्मों में रत् नहीं थे और विरुद्ध कथाओं में रुचि नहीं रखते थे। श्रेष्ठ गुणों से युक्त राजपुत्र राम प्रजाओं के बाहर रहने वाले प्राण के समान ही गुणों से अत्यन्त प्रिय थे।

७. वे सब विद्याओं और ब्रह्मचर्य व्रत में स्नान किए हुए यर्थाथ रूप में अंगों सहित वेदों के जानने हारे और ईशु आदि अस्त्रों में पिता से भी श्रेष्ठ थे।

८. राम धर्म, अर्थ व काम के तत्व को जानने हारे, उत्तम स्मृति वाले प्रतिभा से युक्त लौकिक तथा सामयिक आचारों में समर्थ और चतुर थे।

९. वे न्यायानुकूल प्रग्रह दुष्टों को दण्ड देना और अनुग्रह कृपा में चतुर सत्पुरुषों के संग्रह और निग्रह में देशकाल को जानने हारे, आय के उपायों को और व्यय के कार्यों को जानने वाले थे।

१०. राम गान-वादन, चित्र आदि कलाओं के विज्ञाता, धन के शास्त्रोक्त विभाग को जानने वाले, हाथी अश्व के आरोहण व नियंत्रण में निपुण, धनुर्वेद

के जानने वालों में श्रेष्ठ, लोक में अतिरखों से पूजित, शत्रुओं पर चढ़ाई तथा प्रहार करने वाले, सेना के चयन में चतुर, देवों व असुरों से संग्राम में पराजित न होने वाले असूया से रहित क्रोध पर विजय प्राप्त अहंकार और लोभ से रहित राम प्रजाओं में श्रेष्ठ गुणों से युक्त तीनों लोकों में पूजित, बुद्धि में बृहस्पति के तुल्य व पराक्रम में इन्द्र के समान थे।

जिस प्रकार सूर्य जब निकलता है तो उसके समान प्रकाश देने वाला अन्य कोई पदार्थ उसके समकक्ष नहीं होने से उसका महत्व व शासन स्वतः स्थापित है, ठीक उसी प्रकार अत्यन्त संक्षेप में जो उक्त योग्यताएँ श्रीराम के संदर्भ में महर्षि वाल्मीकि ने प्रदर्शित की हैं उनके आधार पर यह स्वयमेव स्थापित तथ्य था कि अयोध्या के सिंहासन पर दशरथ के पश्चात् राम का ही चयन सर्वथा योग्य था और इसी कारण परिषद ने भी इसका सर्वात्मना अनुमोदन किया। इन्हीं गुणों के कारण राम की लोकप्रियता का पता तब भी लगता है जब वे पिता के व्रत-रक्षा की खातिर अयोध्या छोड़कर वन के लिए जाते हैं तो जैसे पूरी अयोध्या दुःख के गहन सागर में डूब जाती है। भरत भी राम के गुणों और उनकी लोकप्रियता को भलीभाँति जानते थे। यह इसी तथ्य से सिद्ध है कि उन्होंने राम के पीछे से चौदह साल का शासन केवल उनका प्रतिनिधि बनकर करना स्वीकार किया। आर्यावर्त ही वह एकमात्र देश होगा जहाँ कि चक्रवर्ती सम्राट की कुर्सी पर किसी की चरण पादुकाओं ने चौदह साल की लम्बी अवधि तक शासन किया।

- अशोक आर्य, उदयपुर
चलभाष- ०९३१४२३५१०१

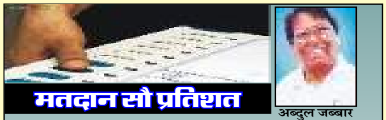

आए वतन पर आँच तो दिल जान दीजिए
संसद को चुनके देश का दीवान दीजिए।।
कन्याकुमारी से चुनो कश्मीर से चुनो,
काबिल वतन परस्त की तासीर से चुनो,
मुफलिस का दिल मिजाज से बन्दानवाज हो,
उस रहनुमा सा देश को इन्सान दीजिए।।
संसद को छू न पायेगा बे-ईमान आदमी,
हो सौ फीसदी चुनाव में मतदान लाजमी,
मौका है दिल की मान तकाजा है वक्त का,
अपने वतन के वास्ते मतदान कीजिए।।
पूजा है प्रजातंत्र को भारत विशाल ने,
सींचा है लोकतंत्र को निष्ठा की ताल ने,
फूला-फला है खूब सहारे विधान के,
फिर भी नयी उमर को नया मान दीजिए।।
फिरकापरस्त ताकतें पनपें न देश में,
मौकापरस्त ताकतें पनपें न देश में,
है भाईचारा खूब मुसीबत में आजकल,
फिर से वतन को प्यार की पहचान दीजिए।।
भारत सा भला देश भी संसार में कहाँ,
ऐसा फलक का फूल भी गुलजार में कहाँ,
'जब्बार' अब वतन की हिफाजत के वास्ते,
फौलादी दिल का देश को दीवान दीजिए।।

नूर निकेतन, कुम्भानगर बाजार
चित्तौड़गढ़ (राज.) ३१२००१
०९४१४१०९९१८२, ०१४७२-२४०६७७

सत्यार्थप्रकाश पहेली-३

रिक्त स्थान भरिये- ईश्वर के विभिन्न नाम याद करिये- पुरस्कार प्राप्त करिये

कू	१	स्थ	■	■	द	२	लु	■	३	सु
■	नि	४	■	५	■	■	■	६	६ गुं	
७	नु	■	८	न्त	८	मी	■	९	९ ङ्ग	ल

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. जो सब व्यवहारों में व्याप्त और सब व्यवहारों का आधार होके भी, किसी व्यवहार में अपने स्वरूप को नहीं बदलता। इससे ईश्वर का यह नाम है।
२. जो अभय का दाता, सत्यासत्य सर्व विद्याओं का जानने सब सज्जनों की रक्षा करने और दुष्टों को यथायोग्य दण्ड देने वाला है। इससे परमात्मा का यह नाम है।
३. जिसमें सब आकाशादि भूत वसते हैं और जो सबमें वास कर रहा है, इससे ईश्वर का यह नाम है।
४. जो निश्चल अविनाशी है। इससे परमात्मा का यह नाम है।
५. जिसका सेवन सब जगत्, विद्वान् और योगीजन करते हैं। इससे उस परमात्मा का नाम यह है।
६. जो शब्द, स्पर्श, रूपादि गुणरहित है। इससे ईश्वर का यह नाम है।
७. जो मनु अर्थात् विज्ञानशील और मानने योग्य है। इससे परमेश्वर का यह नाम है।
८. जो सब प्राणी और अप्राणिरूप जगत् के भीतर व्यापक होके सबका नियम करता है। इससे परमेश्वर का यह नाम है।
९. जो आप मङ्गलस्वरूप और सब जीवों के मङ्गल का कारण है, इससे ईश्वर का यह नाम है।

प्रथम दस सही प्रविष्टियाँ पुरस्कृत की जावेंगी।

सहायक ग्रन्थ- सत्यार्थप्रकाश, पुरस्कार- ''अनूठी, अद्भुत पत्रिका सत्यार्थ सौरभ'' एक वर्ष तक निःशुल्क, घर बैठे प्राप्त करें।
कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ मई २०१४

दृष्टिकोण

पृथ्वी से परे बुद्धिपूर्ण जीवन की संभावना

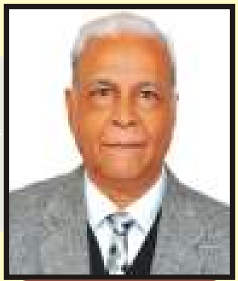

डॉ. पारसमल अग्रवाल

आधुनिक विज्ञान का यह निर्विवाद तथ्य है कि हमारे सूर्य के परिवार में बुध, शुक्र, पृथ्वी, मंगल, गुरु, शनि, अरुण, वरुण एवं यम नामक ९ ग्रह हैं। जो चन्द्रमा हमें दिखाई देता है वह हमारी पृथ्वी का उपग्रह है। इन ९ ग्रहों में से पृथ्वी की तुलना में २ ग्रह, बुध एवं शुक्र, सूर्य के अधिक नजदीक हैं। अतः वहाँ बहुत गर्मी रहती है व इस कारण वहाँ प्राणी जीवित नहीं रह सकते हैं। इसी प्रकार गुरु, शनि, अरुण, वरुण एवं यम पर अधिक ठंडक होने के कारण प्राणियों की संभावना नहीं है। अतः हमारे सूर्य के परिवार में पृथ्वी के अतिरिक्त मंगल ग्रह पर प्राणियों की संभावना है।

यह वर्णन तो मात्र हमारे सूर्य के परिवार का हुआ जिसे सौर परिवार कहा जाता है। जैसे कई परिवारों से मिलकर एक नगर बनता है उसी प्रकार कई सौर परिवार जैसे आकाशीय पिण्डों का एक समुदाय एक गेलेक्सी का नाम पाता है। हमारा सौर परिवार जिस गेलेक्सी में है उसे आकाशगंगा कहा जाता है। हमारी इस गेलेक्सी में हमारे सूर्य

की तरह लगभग १०० अरब तारे हैं। जैसे हमारे सूर्य के साथ ९ ग्रह हैं, उसी प्रकार तारों के साथ भी कई ग्रह होते हैं। एक तारा सूर्य की तरह ही अत्यन्त विशाल (पृथ्वी से लाखों गुना बड़ा) आग का गोला होता है। बहुत दूरी होने के कारण तारा हमें छोटा दिखाई देता है। दूरी का अन्दाज हम इस बात से लगा सकते हैं कि जहाँ सूर्य के प्रकाश को हमारी पृथ्वी तक आने में लगभग ४९९ सैकण्ड लगते हैं, वहाँ हमारे से सबसे नजदीक तारे के प्रकाश को हम तक आने में लगभग सवा चार वर्ष लगते हैं। जैसे एक शहर राष्ट्र नहीं होता है उसी तरह मात्र १०० अरब तारों वाली गेलेक्सी ही ब्रह्माण्ड नहीं है। पूरे ब्रह्माण्ड में स्टीफन हाकिंग के अनुसार लगभग १००० अरब गेलेक्सी हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर इस ब्रह्माण्ड में लगभग {१ के आगे २३ शून्य} तारे हैं। औषधि विज्ञान के १९६७ के नोबल पुरस्कार विजेता जार्ज वाल्ड एवं कई खगोल वैज्ञानिक एक प्रतिशत तारों के ग्रहों में जीवन की संभावना मानते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि लगभग {१ के आगे २१ शून्य= करोड़ X करोड़ X करोड़} ग्रहों में जीवन की संभावना है। वैज्ञानिकों का मत यह भी है कि हमारी ही गैलेक्सी में एक लाख धरतियाँ (ग्रह) ऐसी हो सकती हैं जहाँ हमारी तरह या हमारे से ज्यादा विकसित जीवन हो। इस अनुपात से देखा जाये तो पूरी सृष्टि में {१ के आगे १७ शून्य} धरतियों (ग्रहों) पर विकसित प्राणियों के पाये जाने की संभावना है। स्टीफन हाकिंग जो कि आज के खगोल भौतिकविदों में शिरोमणि हैं बताते हैं कि कहीं कहीं पर तो ऐसे विकसित बुद्धि वाले प्राणी भी हो सकते हैं जिनकी कल्पना कवि भी नहीं कर सकता है। उन्हीं के शब्दों में "Of course there might be other form of intelligent life, not dreamed of even by writers of science fiction---"

सारांश यह है कि करोड़ों करोड़ों पृथ्वियों पर हमारे से भी कम, बराबर व अधिक योग्यता वाले प्राणी रहते होंगे- ऐसी मान्यता आधुनिक वैज्ञानिकों की है। यह भी वैज्ञानिक मानते हैं कि उन प्राणियों के रूप-रंग, आकार, बनावट आदि भी भिन्न-भिन्न प्रकार के हो सकते हैं। उनमें क्रोध आदि भावनाएँ, खानपान परस्पर मित्रता या द्वेष आदि भी कहीं हमारे से कम व कहीं हमारे से ज्यादा हो सकते हैं- ऐसा अनुमान लगाया जाना सांख्यकी के अनुसार उचित ही होगा।

आचार्य उमास्वामी लिखते हैं-

नारका नित्याशुभतर लेश्या परिणाम देह वेदना विक्रियाः। परस्परोदीरित दुखाः। {३.३ एवं ३.५ तत्वार्थ सूत्र}

इसका भावार्थ यह है कि नारकी जीव सदैव ही अत्यन्त अशुभ लेश्या, परिणाम, शरीर, वेदना और विक्रिया को धारण करते हैं एवं एक दूसरे को दुःख को उत्पन्न करते हैं।

{अनुसंधान पान नं.२० पर चालु, अनुसंधान पान नं. से १५ चालु}

दूसरे ग्रहों की इसी जन्म में सैर करके इस तरह नरक का निरीक्षण करना संभव नहीं है किन्तु यहाँ के पृथ्वीलोक के अनुभव, उक्त वैज्ञानिकों की करोड़ों-करोड़ों धरतियों पर विशिष्ट बुद्धि वाले एवं शक्तिशाली प्राणियों की संभावना के ज्ञान से यह अनुमान लगाना कठिन नहीं होगा कि उमास्वामी ने उक्त सूत्रों में जैसा बताया है वैसे दुःख वाले ठिकाने इस विशाल ब्रह्माण्ड में संभव हैं। इसी प्रकार के तर्क स्वर्ग के बारे में दिए जा सकते हैं।

आर्ष मान्यता भी है कि 'ग्रहों का नाम 'वसु' होने से इन लोकों में भी बुद्धिपूर्ण जीवन है।' किसी भी लोक में केवल दुःख हो या केवल सुख हो यह स्थापना चिन्त्य है। आर्ष मान्यता है कि लोक में सुख व दुःख दोनों होते हैं जो प्राणी के कर्मानुसार उसके प्रारब्ध में आते हैं। **-सम्पादक**

यदि कई धरतियाँ हैं जहाँ प्राणी निवास करते हैं व सुख-दुःख भोग रहे हैं व जीवद्रव्य का अस्तित्व मान लेते हैं तथा द्रव्य के रूप में जीव को अविनाशी समझ लेते हैं तो फिर स्वर्ग नरक की धारणा को स्पष्ट करने के लिए इतना ही अधिक जानने की आवश्यकता रह जायेगी कि प्राणी का पुनर्जन्म उसके किए गए कर्मों के अनुसार होता है।

११ भैरवधाम कॉलोनी, हिरणमगरी सेक्टर- ५, उदयपुर

लेखक भौतिक शास्त्र के प्रोफेसर हैं। भारत में कई स्थानों के अतिरिक्त आपने अमेरिका के प्रसिद्ध ओक्लाहोमा विश्वविद्यालय में अध्यापन कार्य किया है। डॉ. अग्रवाल जैन शास्त्रों के निष्णात् विद्वान् हैं। **- सम्पादक**

हिन्दुओं के साथ एक धोखा

संवैधानिक प्रावधानों का निर्वचन

अल्पसंख्यक अधिकारों का मतलब हिन्दू है। जबकि इसका मुस्लिमों द्वारा अपहरण करके उपयोग किया जा रहा है। जब कभी भी अल्पसंख्यक शब्द का प्रयोग होता है तो सामान्यतौर पर इसे मुस्लिम और ईसाईयों के संबंध में प्रयुक्त किया जाता है। पर क्या वास्तव में यह सही है? हमारे संवैधानिक प्रावधानों का गहराई से विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि वास्तव में अल्पसंख्यक से तात्पर्य उन हिन्दुओं से है जो एक राज्य से दूसरे राज्य में चले जाते हैं।

अल्पसंख्यक शब्द हमारे संविधान में परिभाषित ही नहीं किया गया है। हमारे संविधान के दो अनुच्छेदों २९ व ३० में अल्पसंख्यक शब्द का प्रयोग है। अनुच्छेद २९ का शीर्षक है 'अल्पसंख्यकों के हित की सुरक्षा' यहाँ जिस अल्पसंख्यक शब्द का प्रयोग किया गया है उसका तात्पर्य मुस्लिम या ईसाई कदापि नहीं है। वस्तुतः अल्पसंख्यकवाद का संबंध धर्म या मजहब से है ही नहीं और संविधान निर्माताओं ने मुस्लिम या ईसाई वर्ग को कोई विशेष सुविधा प्रदान करने का प्रावधान किया ही नहीं क्योंकि यह समानता के अधिकार का हनन होता। फिर भी इस अनुच्छेद को तोड़ मरोड़कर कांग्रेस सरकारों ने इस प्रकार इसका निवर्चन किया कि मानो यह प्रावधान मुस्लिम और ईसाई तबके के हितों की रक्षा के लिए बनाया गया है।

अनुच्छेद २९:- जैसाकि पूर्व में कहा इसका शीर्षक है 'अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा' यहाँ कहा गया है कि नागरिकों का वह हिस्सा जो भारत की सीमा के अंदर रहता है या उनका कोई ऐसा हिस्सा जो विभिन्न विशिष्ठ भाषा, संस्कृति का प्रयोग करता है उसे अपने भाषा, संस्कृति और लिपि को संरक्षित करने का अधिकार है। इस प्रकार इस अनुच्छेद में न मुस्लिम की बात कही है न ईसाई की और न धर्म, मत-मजहब की बात कहीं गई है। यहाँ केवल भाषा, संस्कृति और सभ्यता की बात कही गई है। इस प्रकार से धार्मिक अल्पसंख्यकवाद का यहाँ कोई प्रश्न ही नहीं है। धार्मिक अल्पसंख्यकवाद तो संविधान की भावना को तोड़ मरोड़कर वोट बैंक बनाने की दृष्टि से नेताओं की और विशेष रूप से लगभग सर्वकालिक राज्य करने वाली कांग्रेस पार्टी की उपज है।

तत्वतः देखा जाए तो अनुच्छेद २९ की सुरक्षा का संबंध जम्मू कश्मीर,नागालैण्ड और मिजोरम राज्यों में रहने वाले हिन्दुओं से संबंध रखता है जो कि भारत में बसने वाले हिन्दुओं से भिन्न सांस्कृतिक व भाषायी परिचय रखते हैं जिनका कि संरक्षण किया जाना चाहिए। बड़ी अजीब बात है कि भारत के दूसरे राज्यों के यहाँ रहने वाले ऐसे समूहों की सांस्कृतिक एवं भाषायी अल्पसंख्यक का दर्जा देकर के उनके हितों को सुरक्षित रखने की कोई सोच तक सरकार नहीं रखती इस प्रकार यह अनुच्छेद २९ का साफ-साफ उल्लंघन है।

इसी प्रकार अनुच्छेद ३० का शीर्षक है 'अल्पसंख्यकों का अपने शिक्षा संस्थान स्थापित करने व उन्हें प्रशासित करने का अधिकार' और इसमें कहा गया है कि वे समस्त अल्पसंख्यक वर्ग जो चाहें धर्म अथवा भाषा के आधार पर अल्पसंख्यक हैं उनको अपनी इच्छा के अनुकूल शिक्षण संस्थान खोलने और उन्हें प्रशासित करने का अधिकार है। इस अनुच्छेद में यद्यपि धर्म के अथवा मजहब के आधार पर अल्पसंख्यक की बात कही गई है। परन्तु वह अपनी मर्जी के शिक्षण संस्थान स्थापित करने तक सीमित है।

इस प्रकार यह बिल्कुल साफ है कि संविधान में प्रयुक्त अल्पसंख्यक शब्द का संबंध मुस्लिम अथवा ईसाई से नहीं है। बल्कि इसका उल्लेख सांस्कृतिक एव भाषायी अल्पसंख्यकों के संबंध में है और उनके हितों को सुरक्षा देने के संबंध में है। 'धार्मिक अथवा मजहबी अल्पसंख्यकों के हित की बात यहाँ नहीं है, जैसीकि प्रचलित भावना है।' इस संबंध में धर्म अथवा मजहब अपने शिक्षण संस्थान खोलने के अतिरिक्त कहीं सामने नहीं आता।

इसको समझने के लिए मैं उदाहरण देता हूँ- मैं तमिलनाडु में पैदा हुआ और मुम्बई में जाकर के चालीस साल से वहीं रह रहा हूँ। इस प्रकार अनुच्छेद २९ के अनुसार मैं महाराष्ट्र में

एक अल्पसंख्यक हूँ और इसी अनुच्छेद के अनुसार मुझे अपनी भाषा, अपनी लिपि, अपनी संस्कृति, पहनावा इत्यादि इत्यादि को बनाये रखने का संवैधानिक अधिकार है। हमारे राष्ट्र में जो विभिन्नता जाति,भाषा, लिपि और रहन सहन के संदर्भ में उपस्थित है, उसे देखते हुए संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद २९ का सही ही प्रावधान किया।

कानूनन देखा जाए तो संविधान के अनुच्छेद २९ के अंतर्गत मैं महाराष्ट्र में एक अल्पसंख्यक हूँ और मुझे वे सब लाभ प्राप्त करने का अधिकार है जो आज गलत रूप से भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं के अंतर्गत केवल मुस्लिमों को दिया जा रहा है। इस प्रकार भारत सरकार द्वारा वे सभी विशिष्ट लाभ और सुविधाएँ जो कि धार्मिक अल्पसंख्यकों के लिए घोषित की जा रही हैं और जिनमें कि सच्चर समिति की नियुक्ति भी सम्मिलित है वे असंवैधानिक हैं। हमारा संविधान मजहब के आधार पर कोई विशेष अधिकार किसी को नहीं देता।

इस प्रकार प्रत्येक राज्य सरकार के अल्पसंख्यक मामलों से संबंधित मंत्रालय का दायित्व है कि वे भाषायी और सांस्कृतिक आधार पर जो अल्पसंख्यक हैं उन राज्यों में उनके हितों की सुरक्षा करे। अर्थात् जब एक राज्य से लोग उनके राज्य में आकर बस जाते हैं। उदाहरण के तौर पर महाराष्ट्र सरकार के अल्पसंख्यक मंत्रालय को उनके राज्य में रह रहे बिहारियों के हित की रक्षा करने का संवैधानिक दायित्व बनता है। राज ठाकरे ने जो आह्वान किया है उसके विरुद्ध ही यह है सही अर्थ अल्पसंख्यकों के हित की सुरक्षा का। परन्तु आज जानबूझकर संविधान के प्रावधानों का गलत निर्वचन कर अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय केवल मुस्लिम और ईसाईयों के हितों की रक्षा करने में लगे हुए हैं और भाषायी तथा सांस्कृतिक अल्पसंख्यक (जैसे मुम्बई में रहने वाले बिहारी और तमिल अथवा तंजबूर में रहने वाले महाराष्ट्रियन अथवा अन्य सभी राज्यों में रहने वाले सिख समुदाय के लोग) की तरफ उनका कोई ध्यान नहीं है।

यहाँ यह भी ध्यान रखना चाहिए कि कि भाषा और लिपि का भेद केवल हिन्दुओं के मध्य ही पाया जाता है न कि मुस्लिम व ईसाईयों के मध्य। इसलिए अनुच्छेद २९ के प्रावधान का लाभ केवल और केवल हिन्दुओं को मिलना चाहिए। यह प्रावधान उन हिन्दुओं के लिए हैं जो कि अपने निवास स्थान से दूर जाकर किसी अन्य राज्य में जाकर रहने लग जाते हैं। इन्हीं का अपहरण मुस्लिम व ईसाईयों द्वारा कर लिया गया है जबकि यह उनके लिए नहीं है। मैं इसे हिन्दुओं के साथ धोखा मानता हूँ।

यहाँ यह भी उल्लिखित कर देना उचित समझता हूँ कि अल्पसंख्यकवाद की अवधारणा 'जिसका संदर्भ मुस्लिम व ईसाईयों के संबंध में दिया जाताहै' केवल और केवल भारत में ही है विश्वभर में कहीं भी, मैं फिर से दोहराता हूँ कि कहीं भी आपको अल्पसंख्यकवाद अथवा बहुसंख्यकवाद की अवधारणा नहीं मिलेगी। भारतीय विशेषरूप से हिन्दू आज अमेरिका, ब्रिटेन, आस्ट्रेलिया आदि जगहों पर बस गए हैं क्या उन्हें उन देशों में अल्पसंख्यक समझा जाता है और इस आधार पर क्या उन्हें कोई विशेष अधिकार प्राप्त हैं? उत्तर नकारात्मक ही है। इन देशों में सभी समान नागरिक हैं और उनके अधिकार और कर्तव्य भी समान हैं तब यह अवधारणा भारत में ही क्यों?

भारत इन सबसे अलग नहीं है। हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान में भी कोई भिन्नता नहीं की फिर भी हमारे चालाक राजनेताओं ने विशेषरूप से कांग्रेस के लोगों ने इसे ऐसा बना दिया। वोट बैंक की राजनीति की सुविधानुसार संविधान को तोड़ा मरोड़ा गया। वास्तव में तो हिन्दुओं को अधिकारों से वंचित कर उन सुविधाओं व हितों को मुस्लिमों को देकर हिन्दुओं के साथ धोखा किया जा रहा है।

– पी.दिवामूथु P. deivamuthu
संपादक- हिन्दू वॉयस (साभार)

अवश्य ध्यान दें

जुलाई १४ तक आजीवन सदस्य बनने वालों को १००रु. मूल्य का, शानदार कैलेण्डर उपहार स्वरूप (डेढ़ वर्षीय, सम्पूर्ण ऋषि-गाथा को चित्रित करने वाला) दिया जावेगा। यह शानदार कैलेण्डर न्यास संरक्षक डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (शिकागोलैण्ड) के सौजन्य से तैयार किया जा रहा है।

– भवानीदास आर्य, मंत्री- न्यास

स्वामी दयानन्द ने धर्म शब्द का अर्थ एवं प्रयोग कर्त्तव्य, सद्गुण, सत्याचरण, न्याय तथा नैतिकता के सन्दर्भ में किया है। उनके लिए (धर्म) नाम है न्याय का और न्याय नाम है पक्षपात का छोड़ना। पूना के एक प्रवचन में स्वामी जी ने धर्म-अधर्म का विभेद करते हुए कहा कि ''परमेश्वर की आज्ञा यह धर्म, अवज्ञा यह अधर्म, विधि यह धर्म, निषेध यह अधर्म, न्याय यह धर्म, अन्याय यह अधर्म, निष्पक्षता यह धर्म, पक्षपात यह अधर्म है। स्वामी जी ने अनेक स्थलों पर मनुस्मृति (६.९१) में वर्णित धृति, क्षमा, आदि दश गुणों को धर्म का लक्षण माना है। उन्होंने पूर्वमीमांसा (१.१.२) तथा वैशेषिक (१.१.२) के धर्म के लक्षण को ज्यों का त्यों स्वीकार करते हुए धर्म को वेद-विहित आज्ञा तथा लौकिक एवं पारलौकिक सुखों का प्रदाता बताया है। स्वामी जी ने धर्म को ऋत्, सत्य, तप, दम, शम, अग्नि, अग्निहोत्र, आतिथ्य, मानव-सेवा, प्रजा-पालन, प्रजनन तथा प्रजाति- इन बारह लक्षणों से युक्त माना है।

इस प्रकार यह ज्ञात होता है कि स्वामी जी ने धर्म का प्रयोग सत्य, न्याय, गुण तथा कर्त्तव्य आदि के रूप में किया है, किसी साम्प्रदायिक अथवा धार्मिक क्रियाकलापों के रूप में नहीं। वह धर्म द्वारा मनुष्य को मनुष्यता से परिपूर्ण करना चाहते थे।

अपने-अपने धर्म में प्रवृत कराएँ तथा राजा, प्रजा एवं राजपुरुष धर्माचरण ही करें।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर स्पष्टतः कहा जा सकता है कि स्वामी दयानन्द द्वारा प्रयुक्त धर्म शब्द अन्धविश्वास, बाह्य आडम्बर एवं कर्मकाण्ड आदि भ्रमजालों से सर्वथा मुक्त है। धर्म का तात्पर्य कर्म, गुण, न्याय तथा सत्याचरण है। महर्षि ने धर्म को लोकहिताय वैदिक निर्देश के रूप में सर्वजन-हेतु सदैव अनुकरणीय स्वीकार किया है। धर्म के

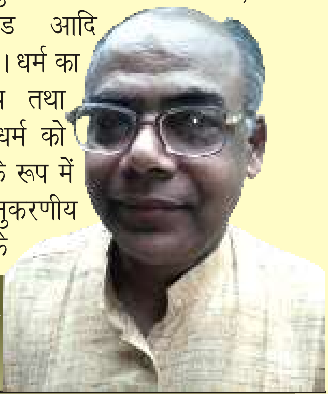

राजनीति और धर्म : दयानन्दीय अवधारणा

गतांक से आगे ....

डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री

यही कारण है कि उनकी धर्म की अवधारणा उनके व्यक्ति की अवधारणा के समानान्तर स्थापित हुई है। उनके लिए 'मनुष्य वही है जो मननशील होकर स्वात्मवत् दूसरों के सुख-दुःख, हानि-लाभ को समझे। अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इसीलिए दयानन्द को अभीष्ट था कि प्रत्येक व्यक्ति धर्माचरण करे।

भारतीय चिन्तन की यह मान्यता रही है कि धर्म को जानना, वस्तुतः वेद को जानना है। धर्म का मूल वेद है। जो धर्मज्ञ हैं वे वेदों को जानते हैं। उनका मत ही धर्म-प्रमाण है। इसी आधार पर स्वामी जी ने वेद, मनुस्मृत्यादि शास्त्र, सत्पुरुषों के आचरण तथा आत्मा को प्रिय अथवा जिसे आत्मा चाहता है- को धर्म के चार उपादान कहा है। अर्थात् इन्ही चार माध्यमों द्वारा धर्म का अभिज्ञान, संरक्षण एवं संवहन किया जाना चाहिए। धर्म ही अर्थ, काम और मोक्ष के फलों का प्रदाता तथा मृत्यु के पश्चात् भी साथ चलने वाला 'सुहृद्' है। अतः राजा आदि सभ्यजनों का कर्त्तव्य है कि वे विभिन्न वर्णों को

अर्थ में दयानन्द ने राजनीति को राज-धर्म कहा है और धर्मानुप्राणित राजनीति का पक्ष प्रस्तुत किया है।

हमारे भारतीय राज-दर्शन में धर्म की सर्वोच्चता को स्वीकृति प्रदान की गई है, जिसका उल्लंघन कोई भी व्यक्ति नहीं कर सकता है, राजा भी नहीं। इस सन्दर्भ में अरविन्द घोष ने बड़े ही स्पष्ट शब्दों में लिखा है कि ''भारत में राजा के ऊपर भी राजा था, धर्म। जो आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, अर्थनीतिक, विचारगत, आचरणगत, रीति-नीति, जातीय जीवन की घनिष्टता के साथ चलता है, उसकी समष्टि को ही भारत में साधारण रीति से धर्म कहा गया है। राजा लोग इस धर्म के बिल्कुल अधीन थे।''

दयानन्द प्रतिपादित धर्म की सम्प्रभुता

स्वामी दयानन्द ने उपर्युक्त भारतीय अवधारणा का ही पोषण किया है। उनके लिए वेदोक्त धर्म (ईश्वरीय विधान) ही सम्प्रभु है। स्वामी जी ने यजुर्वेद (१८.२९) के मंत्र 'वयं प्रजापतेः प्रजा अभूम्' का सन्दर्भ देते हुये लिखा है कि ''सब

मनुष्य लोगों को निश्चय करके जानना चाहिए कि हम लोग परमेश्वर की प्रजा हैं और वही एक हमारा राजा है।'' दयानन्द ने इसीलिए ईश्वर से यह प्रार्थना भी की है कि ''हे परमेश्वर! आप कृपा करके हम सबों के राजा हूजिए और हम लोग आपके पुत्र और भृत्य के समान राज्याधिकारी होकर, आपके राज्य को सत्य-न्याय से सुशोभित करें।'' स्वामी जी का यह भी निर्देश है कि ''........ सब राजाओं के राजा परमेश्वर को जानकर, सब सभाओं में सभाध्यक्ष का अभिषेक करें।'' अपने वेदभाष्य में दयानन्द लिखते हैं- 'समस्त राजाओं का राजा सब जगत् को अन्तर्यामीपन से प्रेरणा देने वाला जगदीश्वर तुमको राजा करके तेरे पर अधिष्ठाता होके रहेगा' (यजु. भा. ६.२)। 'किसी का भी सामर्थ्य नहीं है जो ईश्वर के किए हुए नियमों का उल्लंघन करे (३.५६.१ ऋ.भा.)'। 'यह सब परमेश्वर का राज्य है (१. १३१.५ ऋ.भा.)।' इन समस्त कथनों से यही भासित होता है कि वास्तविक राजा ईश्वर और उसका नियम (धर्म) है, राजा एवं सभासद् आदि राज्य-प्रशासनिक अधिकारियों की स्थिति मात्र सेवक की है, स्वामी (सम्प्रभु) की नहीं।

स्वामी जी ने जिस धर्म-सम्प्रभुता के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है, उसे चूँकि वेद में 'ऋत्' कहा गया है, अतः यह कहा जा सकता है कि स्वामी जी ने वैदिक 'ऋत्' की सम्प्रभुता को ही अपनी स्वीकृति दी है। ऋत् सम्प्रभुतावाद को स्पष्ट करते हुए डॉ. वी.पी. वर्मा का अभिमत है कि ''ऋत्वाद का अर्थ है- प्राकृतिक विधानों का पूर्ण परिपालन और उससे अपनी नैतिकता, धर्म और आत्मचेतना का विकास। 'ऋत्' की सम्प्रभुता किसी राजा को अधिनायक तथा निरंकुश होने से रोकती है। यह एक ओर हमें आस्टिन और हीगेल के उग्र राज्य-शक्तिवाद से बचाता है और दूसरी ओर बहुलवाद के भ्रमजाल से भी त्राण करता है। मजूमदार ने भी धर्म की श्रेष्ठता को बहुलवादी विचारक क्रैब के विधि की सर्वोच्चता के सिद्धान्त की पृष्ठभूमि माना है। स्वामी जी के चिन्तन में राजत्व की अवधारणा के सूक्ष्म विवेचन से उपर्युक्त विद्वानों के निष्कर्षों की पुष्टि हो जाती है। उन्होंने राजा के असीमित, अनियन्त्रित, सर्वोच्च एवं दैवी स्वरूप का स्पष्ट रूप से खण्डन किया है।

स्वामी जी, राजा (राज्य) को पाश्चात्य जर्मन आदर्शवादी विचारक हीगेल की भाँति पृथ्वी पर ईश्वर का पदार्पण नहीं मानते हैं, अपितु उन्होंने राजा का स्थान परमेश्वर से द्वितीय स्थान पर निर्धारित कर राजा के देवत्व के भ्रम को पूर्णतया समाप्त कर दिया है। दयानन्द की मान्यता है कि राजा की स्थिति मात्र सभाध्यक्ष की है, जिसके कारण अकेले उसके ही

हाथ में किसी प्रकार के हुक्म चलाने की शक्ति नहीं है। वह सम्पूर्ण राज्य-कार्य सभा की सहमति और परामर्श से ही करेगा। उल्लेखनीय है कि महर्षि ने राजा को सभाधीन रखकर सभा की सर्वोच्चता को स्वीकार नही किया है, अपितु उन्होंने राजा के अधीन सभा, सभाधीन राजा, राजा और सभा को प्रजा के अधीन और प्रजा को राजसभा के अधीन रखकर राजा, सभा और प्रजा के मध्य शक्ति के अवरोध एवं सन्तुलन के सिद्धान्त का प्रतिपालन किया है।

महर्षि दयानन्द के राजनीति-दर्शन में जन-सम्प्रभुता का सिद्धान्त बीज-स्वरूप प्राप्त होता है। उनका मत है कि ''राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले हैं और राजा उनका रक्षक है। जो प्रजा न हो तो राजा किसका और राजा न हो तो प्रजा किसकी कहावे? दोनों अपने-अपने काम में स्वतन्त्र और मिले हुए प्रीतियुक्त काम में परतन्त्र हैं।'' उक्त कथन से यह ध्वनित होता है कि राजा की शक्ति, सत्ता और अस्तित्व का अन्तिम नियामक तत्त्व प्रजा ही है। राजा-प्रजा दोनों आत्म-सम्बन्धी कार्य करने हेतु स्वतन्त्र हैं परन्तु पर-सम्बन्धी कार्यों के सन्दर्भ में परतन्त्र हैं। यहाँ हमें ब्रिटिश उपयोगिकतावादी विचारक जॉन स्टुअर्ट मिल के स्वतन्त्रता सम्बन्धी विचारधारा के संकेत प्राप्त होते हैं, जिसके अन्तर्गत आत्म-सम्बन्धी कार्यों को करने की स्वतन्त्रता देते हुए कर्त्ता पर मात्र उसके अपने अस्तित्व-संरक्षण का ही बन्धन स्थापित किया गया है, परन्तु पर-सम्बन्धी कार्यों के करने में कर्त्ता पर विधि तथा सामाजिक दायित्व के अनुपालन की अनिवार्यता का प्रतिबन्ध है। ध्यातव्य है कि आत्म-सम्बन्धी कार्य में जहाँ मिल ने कानूनी बाध्यकारिकता को स्थान नहीं दिया है, वहाँ दयानन्द ने स्वसम्बन्धी कार्य में भी कानून, नैतिकता एवं धर्म के प्रतिबन्ध की स्थापना की है। स्वामी जी ने विधि की सम्प्रभुता को स्वीकार किया है, परन्तु उनके लिए विधि सम्प्रभु (राजा) का आदेश न होकर, धर्म की ही अनुकृति है। कानून धर्म के प्रतिकूल नहीं हो सकता है। विधि ऐसी होनी चाहिए जिससे यह लोक और परलोक दोनों शुद्ध और मंगलमय हों।

- चाणक्यपुरी, अमेठी- २२७३०५ (उत्तर प्रदेश)

'वेद और सत्यार्थ प्रकाश'

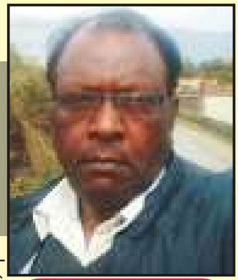

मन मोहन कुमार आर्य

वेद सृष्टिकर्ता, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान व सर्वव्यापक ईश्वर के द्वारा प्रदत्त ज्ञान है। ईश्वर के सर्वज्ञ होने के कारण उसका दिया हुआ ज्ञान भी पूर्ण व सर्वांगीण होना चाहिये और वेदों का ज्ञान ऐसा ही है। वेद ज्ञान की भाँति आज ऐसा अन्य कोई ग्रन्थ सारे संसार में नहीं है। किसी मत या सम्प्रदाय के ग्रन्थ की तुलना वेदों से नहीं की जा सकती। मतों के ग्रन्थों को देखते हैं तो उनमें अनेक कथन सृष्टिक्रम, विज्ञान, ज्ञान व सत्य से विपरीत पाते हैं। जिस ग्रन्थ व ज्ञान में एक भी बात असत्य या अज्ञानपूर्ण हो उसे ईश्वरीय ज्ञान कदापि नहीं कह सकते। यदि कोई व्यक्ति या समुदाय किसी पुस्तक के ईश्वरीय ज्ञान होने का दावा करता है तो उसे अपनी पुस्तक की प्रत्येक बात या कथन की पुष्टि कि वह पूर्ण रूप से सत्य है, करनी होगी। ऐसा दावा किसी का नहीं है। केवल महर्षि ने ही वेद के संदर्भ में यह दावा किया था जिसका विपक्षीगण समुचित उत्तर नहीं दे सके और अभी भी मौन हैं, अतः वेद ज्ञान सभी पक्षों द्वारा ईश्वरीय, सत्य, उपादेय, प्रासंगिक व सबके लिए अपरिहार्य बन गया है। यह सर्व-विदित है कि सूर्योदय से अन्धकार मिट जाता है, इसी प्रकार से ज्ञान का प्रकाश हो जाने पर अज्ञान मिट जाता है। अज्ञान मिट गया तो अन्धविश्वास व कुरीतियाँ भी समाप्त हो जानी चाहिये और इनके स्थान पर सत्य, अन्धविश्वासरहित, ज्ञान से परिपूर्ण सुरीतियों का प्रचलन होना चाहिये। परन्तु हम देखते हैं कि ऐसा हो नहीं रहा है। इसका कारण यह है कि यदि कोई आँख बन्द कर पड़ा रहे या नेत्ररोग से ग्रसित हो तो उसे सूर्य के प्रकाश से लाभ नहीं पहुँचता। ऐसी ही कुछ स्थिति हमारे उन भाईयों की है जो वैदिक ज्ञान से लाभ प्राप्त नहीं कर रहे हैं व दुराग्रह पर स्थित हैं। महर्षि दयानन्द के पत्रों में एक पत्र में कहा गया है कि सत्य का स्वरूप ऐसा नहीं है कि जिसे कोई स्थाई रूप से ढक सके या दबा सके। जिस प्रकार बादलों के होने पर सूर्य ढक जाता है और वर्षा के होने पर बादल का अस्तित्त्व समाप्त होकर सूर्य अपनी पूर्ण आभा के साथ प्रकाशित हो जाता है, कुछ ऐसा ही सत्य ज्ञान के साथ भी होता है। कुछ काल तक निग्रह में रहने के पश्चात् अज्ञान, अन्धकार के बादल छँट जाते हैं और सूर्य व ज्ञान का प्रकाश सर्वत्र पुनः फैल जाता है। ऐसा ही समय महाभारत काल के बाद आया था। महर्षि दयानन्द के आगमन पर अवैदिक मान्यताएँ व अज्ञान दूर होकर वेद के सत्य ज्ञान का सूर्य जगमगा उठा और आज अपनी पूरी आभा के साथ प्रकाशित हो रहा है। इस कारण महर्षि अपने पत्र में कहते हैं कि वह असत्य को किसी भी मूल्य पर स्वीकार नहीं कर सकते। उनके जीवन की ऐसी अनेक घटनायें हैं जब उन्हें प्रलोभन दिये गये परन्तु वह उनमें नहीं फँसे और उनका डट कर खण्डन किया। सत्य को छोड़कर असत्य व नित्य को छोड़कर अनित्य को प्राप्त होना मनुष्यता से बहिः अर्थात् मनुष्य होकर मनुष्य न होना है।

हम भावनाओं में बहकर नहीं अपितु अपने स्वाध्याय के आधार पर अनुभव करते हैं कि संसार में जितने भी मत-सम्प्रदाय या तथाकथित धर्मों की पुस्तकें हैं, उनकी वेद से कोई समानता नहीं है। इनमें आकाश व पाताल का अन्तर है। सम्भवतः इसी कारण महर्षि दयानन्द सरस्वती, जो महाभारत युद्ध के पश्चात् विगत ५ हजार वर्षों में धर्म, संस्कृति, योग, दर्शन व ऐसे सभी विषयों के सबसे बड़े विद्वान् थे, ने कहा कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।' वेदों में जो ज्ञान है वह मनुष्यों के जीवन निर्वाह के लिए अपने आप में पूर्ण ही नहीं है अपितु एक आदर्श जीवन व्यतीत करते हुए आध्यात्मिक एवं भौतिक दृष्टि से चरम स्थिति जिसे अभ्युदय व मोक्ष के नाम से जानते हैं, प्राप्त की जा सकती है। वेदों का ज्ञान मनुष्यों को कैसे मिला यह सभी के जानने योग्य है। यहाँ यह भी कहना चाहते हैं कि जो व्यक्ति जानता व मानता है कि वेद ईश्वर से प्राप्त ज्ञान है उसे निरन्तर इस विषय में चिन्तन मनन करते हुए नए तथ्यों का पता करना चाहिये। इस ज्ञान की प्राप्ति व उपलब्धि का तरीका अन्य प्रकार से मनुष्यों को मिलने वाले ज्ञानों से सर्वथा भिन्न है। अन्य ज्ञान तो माता-पिता, आचार्य, अध्यापक, गुरु व पुस्तकों आदि से प्राप्त होते हैं परन्तु यह ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर अमैथुनी सृष्टि में आदि-प्रथम चार ऋषियों को देता है। आदि चार ऋषि व अन्य मनुष्य बड़ी संख्या में उत्पन्न होते हैं। इन मनुष्यों के ज्ञान व बल प्राप्ति की क्षमतायें बाद में उत्पन्न होने वाले व आजकल के मनुष्यों से कहीं अधिक होती हैं। ज्ञान देने के लिए ईश्वर चार ऋषियों अग्नि, वायु, आदित्य व अंगिरा को क्रमशः ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद का ज्ञान देता है। यह ज्ञान ईश्वर ने इन ऋषियों की आत्मा में जीवस्थ स्वरूप से दिया। इसको इस प्रकार से समझ लें कि जब दो व्यक्ति आस-पास, बहुत समीप होते हैं तो एक व्यक्ति दूसरे को बोलकर बताता है। पूछता है कि समझ में

आया या नहीं। नहीं आने पर समझाता है। अब कल्पना कीजिए कि बताने वाला व्यक्ति बताये जाने वाले व सुनने वाले व्यक्ति की आत्मा के अन्दर भी प्रविष्ट है तो वह क्या करेगा? क्या उसे बोलने की आवश्यकता होगी। नहीं होगी इसलिए कि उसका कान बाहर है वह बोलने वाला अन्दर। कान का काम बाहर उठने वाले शब्दों को सुनना होता है। ज्ञान देने वाला यदि हमारे भीतर हो, तो बोलने व सुनने की आवश्यकता नहीं है। वह ज्ञान बिना बोले व बिना सुने आत्मा को प्राप्त हो जाता है। वेदों के ज्ञान के सन्दर्भ में सारी सृष्टि का निर्माता जो सर्वव्यापक, सर्वातिसूक्ष्म, सर्वान्तर्यामी व सर्वज्ञ आदि अनन्त गुणों वाला है, वह ज्ञान दे रहा है। ज्ञान लेने वाला एक अल्पज्ञ, एकदेशी व चेतन जीवात्मा है जो मनुष्य शरीर में स्थित है। अतः ईश्वर को ज्ञान देने में कोई कठिनाई नहीं है। इसका प्रमाण ''चार वेद'' हैं। यदि वेद को ईश्वरीय ज्ञान नहीं मानते तो न मानने वालों को अपना पक्ष सिद्ध करना पड़ेगा और मानने वालों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। यह उत्तर दिये जाने सम्भव नहीं हैं ऐसा विवेक व अनुभव से सिद्ध हुआ है। विगत १३६ वर्षों से महर्षि दयानन्द व आर्य समाज वेदों को ईश्वर प्रदत्त सिद्ध करने के पक्ष पर डटे हुए हैं। आज हमारी एतद् विषयक मान्यता का विरोधी कोई है ही नहीं, यदि होता तो सामने आता और ठोस तर्क देता। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानने का पक्ष सत्य सिद्ध हो चुका है। एक अन्य उदाहरण और लेते हैं। हम अपने आप से भी यदा-कदा बातें करते हैं अर्थात् हमारी आत्मा जब कुछ विचार व चिन्तन करती है तब उसमें भाषा व शब्दों का व्यवहार होता है। परन्तु अपनी आत्मा में विचार व चिन्तन करते हुए हम बोलते नहीं हैं, इसकी आवश्यकता ही नहीं होती। इसी प्रकार ईश्वरात्मा-परमात्मा, ऋषियों की आत्मा में ज्ञान को बिना मुख-इन्द्रिय से बोले जीवस्थ स्वरूप से देते या प्रदान करते हैं।

वेदों की हमने चर्चा की। यह वेद मध्य काल में विलुप्त प्रायः हो चुके थे। कई बार कार्य अच्छे न होने पर भी उन कार्यों में से अच्छाईयाँ जन्म ले लेती हैं। सायण, महीधर आदि ने वेदों का भाष्य किया जो कि वेदों के सत्य व वास्तविक अर्थों का तो बोध नहीं कराता परन्तु इससे चारों वेदों की संहितायें अर्थात् ईश्वर से प्राप्त मन्त्रों का संरक्षण हुआ। सायण के काल में न तो आजकल की तरह कागज बनता था और न ही मुद्रण की सुविधाएँ थीं। कागज के विकल्प के रूप में भोज पत्र, सम्भवतः हाथ से बना हुआ कागज या ऐसा ही कुछ अन्य होता था। मुद्रण के स्थान पर हस्त-लिखित प्रतियाँ ही हो सकती हैं। वह सायण व अन्यों के इतने वर्षों बाद तक सुरक्षित रहीं यह भी एक बहुत बड़ा चमत्कार प्रतीत होता है। महाभारत काल के बाद जहाँ अन्धकार व अन्धविश्वासों का युग आया, वहीं एक कार्य तो ऐसा हुआ कि जिसके लिए कुछ अज्ञात लोग प्रशंसा के पात्र हैं और वह थे वह लोग जिन्होंने चारों वेदों की मन्त्र संहिताओं को स्मरण कर या लिखकर सुरक्षित रखा। संसार में ऐसा कार्य कहीं नहीं हुआ। वेद अन्य ग्रन्थों व साहित्य से सर्वथा भिन्न हैं। सृष्टि के आरम्भ से ही वेदों को स्मरण करने की परम्परा थी जो आज भी जारी है। आज भी दक्षिण में ऐसे लोग हैं जिनके यहाँ परम्परा से वेदों को सस्वर कण्ठस्थ किया जाता है। यद्यपि इन लोगों को मन्त्रों के अर्थ ज्ञात नहीं होते परन्तु वेदों के प्रति श्रद्धा का यह एक ऐसा उदाहरण है जिसकी मिसाल सारी दुनियाँ में कहीं नहीं मिलती। मैक्समूलर जैसे पाश्चात्य विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा की है। वेदों की मन्त्र-संहिताओं कि जिनका आकार २० हजार से अधिक मन्त्र हैं और जिनका उन्हें अर्थ-ज्ञान नहीं है, उन्हें कण्ठस्थ करना वस्तुतः इस पृथिवी पर सबसे बड़ा चमत्कार है। हम वेदों की रक्षा करने के लिए अपना जीवन उत्सर्ग करने वाले उन सभी बन्धुओं को अपने हृदय से प्रणाम कर उनका धन्यवाद करते हैं।

महाभारत के कुछ काल बाद हुए जैमिनी ऋषि पर आकर ऋषि परम्परा के अवरुद्ध हो जाने के कारण वेदों के सत्य अर्थों का लोप हो गया। यद्यपि इसके बाद भी वेदों के अनेक विद्वान् हुए जिन्होंने सत्यासत्य मिश्रित वेदार्थ किए हैं। इनके असत्य अर्थों के लिए उनका दोष इसलिए कम है कि वह सत्य अर्थों को जानते ही नहीं थे। दोषी तो तब होते जब उन्होंने जानबूझकर मनमाने अर्थ किये होते। वास्तविक दोषी तो वे लोग हैं जिनके आलस्य प्रमाद के कारण वेदों की परम्परा में

रुकावटें आईं। जो भी हो, जहाँ एक ओर अन्धकार था, वहीं दूसरी ओर कुछ वेदों के रक्षक भी ईश्वर की कृपा से देश में रहे जिन्होंने आर्ष व्याकरण के ग्रन्थ अष्टाध्यायी, महाभाष्य, निरुक्त व अन्य ग्रन्थों का प्रणयन किया। कालान्तर में कुछ वेदभक्तों द्वारा इन ग्रन्थों की शताब्दियों तक रक्षा हो सकी जिससे प्रज्ञाचक्षु गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती को यह व्याकरण आदि ग्रन्थ प्राप्त हो सके और उनसे इनका ज्ञान स्वामी दयानन्द सरस्वती को प्राप्त हो सका। गुरु विरजानन्द सरस्वती व स्वामी दयानन्द सरस्वती को वेदों के सत्य अर्थो के पुनरुद्धार का श्रेय है। आज वेद अपने वास्तविक अर्थों के साथ उपलब्ध हैं। स्वामी दयानन्द के बाद उनके अनेक शिष्यों ने वेदों की रक्षा व उनके भाष्य अर्थात् सत्य अर्थों को जन-सामान्य को सुलभ कराने में घोर परिश्रम व तप किया। कुछ नाम पं. गुरुदत्त विद्यार्थी, जयदेव शर्मा विद्यालंकार, हरिशरण सिद्धान्तालंकार, पं. तुलसीराम स्वामी, स्वामी ब्रह्ममुनि, पं. आर्यमुनि, पं. विश्वनाथ विद्यालंकार विद्यामार्तण्ड, डा. रामनाथ वेदालंकार, स्वामी डा. सत्य प्रकाश, पं. क्षेमकरण दास त्रिवेदी, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती आदि मुख्य हैं। चार वेद मन्त्र संहितायें ईश्वरीय ज्ञान हैं जो आदि सृष्टि में मनुष्यों को ईश्वर से प्राप्त हुआ। इन्हें नित्य कहा जाता हैं। नित्य वह ज्ञान होता है जो सदा-सर्वदा एक समान रहता है। ऐसा ज्ञान समय के साथ घटता व बढ़ता नहीं है। ईश्वर में यह ज्ञान अनादि काल से है और अनन्त काल अर्थात् भविष्य में भी इसी प्रकार से इतना ही, न कम न अधिक, बना रहेगा। यह ज्ञान क्योंकि कभी उत्पन्न ही नहीं हुआ अर्थात् यह ईश्वर में हमेशा से है, इस कारण यह भविष्य में भी इसी प्रकार से पूर्ववत्, वर्तमानवत् सुरक्षित रहेगा। प्रत्येक युग व कल्प में इसका अस्तित्व होगा व यह ऐसे का ऐसा ही परिवर्तन बिना बना रहेगा। यह ज्ञान मनुष्यों को किस प्रकार से मिला, इसका संक्षिप्त उत्तर है कि ईश्वर ने सृष्टि व मनुष्येतर प्राणियों की रचना करने के बाद युवा मनुष्यों को बनाया। इन स्त्री व पुरुषों में अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा व ब्रह्मा नाम के पाँच ऋषि भी उत्पन्न हुए। ईश्वर सर्वव्यापक व सर्वान्तर्यामी होने से मनुष्यों की जीवात्मा के भीतर भी विद्यमान है। उसने इन प्रथम चार ऋषियों की आत्मा में प्रेरणा करके वैदिक भाषा व ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद का ज्ञान स्थापित कर दिया। आज कम्प्यूटरों में भी पेनड्राइव, फ्लोपी या सीडी व ऐसे अन्य साधन बन गये हैं कि इन्हें कम्प्यूटर में लगाकर इन्सटाल की कमाण्ड या आदेश देते हैं और इनमें जो ज्ञान, भाषा, डेटा, आडियो व वीडियोज़् आदि होते हैं वह सब कम्प्यूटर में अपलोड हो जाते हैं और कम्प्यूटर यथोचित प्रकार से काम करने के योग्य हो जाता है। कम्प्यूटर नेटवर्किंग से एक

कम्प्यूटर के डेटा, आडियो, वीडियो, शाब्दिक ज्ञान आदि को वेबसाइट, इमेल व लिंक आदि के द्वारा आदान-प्रदान किया जाता है। ईश्वर के ज्ञान देने के बाद उन चारों ऋषियों को ईश्वर की प्रेरणा हुई कि वह उन्हें दिया गया वेदों का ज्ञान एक-एक कर ब्रह्मा जी को प्रदान करें। ब्रह्माजी को भी ऐसी ही प्रेरणा हुई थी। इस प्रकार से प्रथम चार ऋषियों ने उच्चारण व श्रवण के द्वारा ब्रह्माजी को चार वेदों का ज्ञान दिया। चिन्तन करने पर हमें लगता है कि जब अग्नि ऋषि ब्रह्माजी को ऋग्वेद का ज्ञान दे रहे थे तो वहाँ उपस्थित वायु, आदित्य व अंगिरा भी ऋग्वेद के मन्त्रों व उनके अर्थों आदि को अवश्य ही सुन रहे होंगे। उन सब पाँच ऋषियों को इस प्रकार से ऋग्वेद का ज्ञान एक समय में हो गया। इसके बाद वायु ने यजुर्वेद का ज्ञान ब्रह्माजी को दिया और इसके सम्पन्न होने पर पाँचों ऋषियों को यजुर्वेद का ज्ञान भी हो गया। इसी प्रकार से सामवेद व अथर्ववेद का ज्ञान भी सभी पाँचों ऋषियों को उत्तर काल में हुआ। यह कार्य समाप्त होने पर शेष मनुष्यों, स्त्री व पुरुषों को ज्ञान कराने का अवसर आया। इन पाँच ऋषियों ने समूह में उन सबकों चारों वेदों का ज्ञान कराने का प्रयत्न किया। हमारा निजी अनुमान है कि अनेक मनुष्य अर्थात् स्त्री व पुरुष चारों वेदों के जानकार हो गये। कुछ अधिक प्रवीण व योग्य बने व कुछ कम। इस प्रकार से सृष्टि के आरम्भ में वेदों के द्वारा ज्ञान के प्रचार व अध्ययन-अध्यापन की परम्परा आरम्भ हुई। **क्रमशः ....**

- १९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून-२४८००१
दूरभाषः ०९४१२९८५१२१

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थ प्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित सत्यार्थ प्रकाश (मानक संस्करण) अवश्य खरीदें।

मात्र ४० ₹

प्राप्ति स्थल

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाबबाग उदयपुर - ३१३००१

अफगानिस्तान में महाभारतकालीन विमान मिला

तीन साल तक छिपाकर रखा गया रहस्य

रूस के ''विदेश खुफिया विभाग'' (एस.वी.आर.) ने पिछले दिनों एक रपट जारी की है जिसके अनुसार दिसम्बर २०१० में अफगानिस्तान में ५० अमेरिकी सैनिक रहस्यमय तरीके से मारे गये थे। ''नेवी सील्स'' अमेरिका के सर्वश्रेष्ठ सैनिक ''कमाण्डो'' हैं। इसी नेवी सील्स के उक्त ५० कमाण्डो 'हेरात' प्रान्त (अफगानिस्तान) की एक गुफा से एक ५००० वर्ष पुराने महाभारतकालीन विमान को निकालने की कोशिश कर रहे थे।

आठ सैनिक गायब हो गये

रूसी खुफिया विभाग की रपट के अनुसार लगभग तीन वर्ष पूर्व दिसम्बर में अमेरिकी सैनिकों को हेरात की एक गुफा में अंतरिक्ष विमान जैसी आकृति का एक प्राचीन विमान मिला। कमाण्डो टुकड़ी के आठ सैनिकों ने विमान को गुफा से निकालने का प्रयत्न किया तो आठों सैनिक गायब हो गये। इस रहस्यमय घटना का समाचार मिलते ही अमेरिका के मित्र देशों के वैज्ञानिक और नेता अफगानिस्तान में इकट्ठे हो गये। वैज्ञानिकों ने अनुमान लगाया कि गुफा में मौजूद विमान कम से कम पाँच हजार वर्ष पुराना तथा महाभारत युद्ध के समय का है। वैज्ञानिकों ने यह निष्कर्ष भी निकाला कि विमान ''समय चक्रवात'' (टाइम वैल) में फँसा हुआ है। विमान के चारों ओर इलेक्ट्रोमैग्नेटिक रेडियएशन-ग्रेविटी क्षेत्र है जो किसी भी व्यक्ति को तत्काल ऊर्जा में बदलकर दूसरे समय-अन्तराल में भेज देता है। आधुनिक काल में उक्त रेडियशन क्षेत्र की खोज महान् वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंसटीन ने की थी।

उक्त खुफिया रपट के अनुसार ही 'महाभारत' में ऐसे विमानों का उल्लेख है जिनकी परिधि बारह हाथ बताई गई है। ये विमान मिसाइलों का प्रहार करने में सक्षम थे। महाभारत के अनुसार इनसे ऐसे मारक अस्त्र भी दागे जा सकते थे जो निशान को पूरी तरह नष्ट करने में सक्षम थे। वेदों और महाभारत पर गहन शोध करने वाले विद्वान् सर डेसमण्ड लेस्बी ने बताया है, कि उस समय के विमान गुरुत्वाकर्षण बल को शून्य कर आसमान में उड़ते थे। ये विमान 'ब्रह्मास्त्र' का उपयोग कर सकते थे जो वास्तव में परमाणु बम की तरह थे और जिनसे महाविनाश हो जाता था। महर्षि भारद्वाज ने विमान शास्त्र पर लिखे अपने ग्रंथ में भी विमानों को 'गुरुत्व' से मुक्त कर उड़ाने का वर्णन किया है। महर्षि ने विमान को उड़ाने की कई प्रकार की विधियाँ तथा जरूरत पड़ने पर विमान को अदृश्य कर देने की विधि का भी उल्लेख किया है।

अंतरिक्ष यान का वर्णनः

समाचारों के अनुसार कुछ वर्षों पहले ल्हासा में चीनियों को संस्कृत के कुछ ग्रन्थ मिले। उन ग्रन्थों को अनुवाद के लिए चण्डीगढ़ विश्वविद्यालय भेजा गया। अनुवाद करने वाली डॉ. रूथ रैना ने हाल ही में बताया है कि उक्त ग्रन्थों में अंतरिक्ष यान बनाने की विधियों का वर्णन किया गया है। डॉ. रैना ने यह बताया कि इन यानों द्वारा एक से दूसरे ग्रह की यात्रा आसानी से की जा सकती थी। ३१ जुलाई २०११ अमेरीकी सेना ने विमान की खोज-बीन के लिये फिर से एक सैनिक टुकड़ी को भेजा। इस टुकड़ी के तीन सैनिक विद्युत-चुम्बकीय क्षेत्र को मापने के उपकरण साथ ले गुफा के अन्दर घुसे। ये सैनिक भी गुफा में पूरी तरह गायब हो गये। बाहर खड़े उनके साथी वहाँ से भाग खड़े हुए।

रूसी रपट के अनुसार ५ अगस्त को अमेरिकी कमाण्डो ने विमान को 'टाइम-वैल' सहित पहले काबुल और फिर अमेरिका ले जाने की कोशिश की। अत्याधुनिक तकनीक का सहारा लेते हुए विशेष कमाण्डो ने हेलिकॉप्टरों के सहारे विमान सहित 'टाइम-वैल' को उठाया और काबुल ले जाने लगे। इसके पीछे चार ब्लैक-हॉक हेलिकॉप्टरों में 'नेवी सील्स' के कमाण्डो भी थे। इन चालीस विशेष कमाण्डो के साथ सधे हुए 'जर्मन शेफर्ड' कुत्ते भी थे। इन कुत्तों में विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र में होने वाले किसी भी बदलाव को पहचान लेने की क्षमता थी। काबुल के समीप समय चक्रवात (टाइम-वैल) अचानक सक्रिय हो गया और उससे सभी चालीस जवान, हेलिकॉप्टर तथा जर्मन शेफर्ड कुत्ते सभी कुछ नष्ट हो गया। उक्त रपट के अनुसार विमान और टाइम-वैल भी इसमें नष्ट हो गये। अमेरिकी सरकार ने इस दुर्घटना को पहले तो छिपाये रखा और बाद में सैनिकों की रॉकेट हमले में शहादत कह कर प्रचारित किया। वास्तव में एक भी सैनिक का शव अमेरिका नहीं ले जाया जा सका क्योंकि सारे सैनिक राख में बदल चुके थे।

(पाथेय कण से साभार)

अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए

इस हेतु अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश
एक बार अवश्य पढ़ें।

पृथिवी शेषनाग अथवा बैल के सींग पर टिकी है अथवा चटाई की तरह चपटी है ऐसी मान्यताएँ अवैज्ञानिक, तर्क व सृष्टिक्रम के विरुद्ध अविद्याजन्य हैं।

वास्तविकता है

१. गुरु पदार्थ विना घूमे आकाश में नियत स्थान पर कभी नहीं रह सकता।
२. सूर्य .... सब लोकों के साथ आकर्षण गुण से सहवर्त्तमान अपनी परिधि में घूमता रहता है।
३. यह भूगोल जल के सहित सूर्य के चारों ओर घूमता जाता है। इसलिए भूमि घूमा करती है।

– सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास–

समाचार

आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् डॉ. रूपकिशोर शास्त्री का सम्मान

मानव संसाधन विकास मंत्रालय के महर्षि सान्दीपनी राष्ट्रिय वेदविद्या

प्रतिष्ठान के सचिव डॉ. रूपकिशोर शास्त्री अपने शासकीय दायित्व के सुचारु संचालन के साथ ही महर्षि दयानन्द की वेद संबंधी मान्यताओं के प्रसारण हेतु प्राणप्रण से प्रयास करते रहते हैं, यह सर्वविदित है। पूर्व में अनेकों पुरस्कारों से विभूषित डॉ. शास्त्री को हाल ही में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के कर-कमलों द्वारा 'पाणिनि पुरस्कार' प्राप्त हुआ है। इससे डॉ. शास्त्री ही नहीं सम्पूर्ण आर्यजगत् गौरवान्वित है।

वेद शिरोमणि डॉ. शास्त्री ने भारत के २५ राज्यों में ५०० से अधिक वेद विद्यालय स्थापित कराए हैं। एतदर्थ डॉ. शास्त्री के प्रति आभार सहित प्रभु से उनके निरामय दीर्घायुष्य की प्रार्थना करते हैं। - अशोक आर्य, उदयपुर

आर्यपुत्र आत्मदीप का आर्य समाज ने किया सम्मान

कोटा क्षेत्र में आर्य समाज का प्रचार प्रसार एवं राजस्थान में विद्वता के लिए पहचाने जाने वाले सुनेल, झालावाड़ निवासी श्री कन्हैया लाल गुप्त के पुत्र एवं आर्य संस्कारों में पले बढ़े व जाने माने पत्रकार आत्मदीप का मध्यप्रदेश राज्य के सूचना आयुक्त मनोनीत किए जाने पर आर्य समाज जिला सभा कोटा द्वारा अभिनन्दन करते हुए सम्मान किया गया। इस अवसर पर मंच पर राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष श्री कैलाश मेघवाल, कोटा के विधायक ओम बिरला एवं आमंत्रित वरिष्ठ पत्रकार उपस्थित थे। - कैलाश बाहेती, जिला मंत्री, कोटा

कविवर कुमार राजपूत सम्मानित हुए

हर्ष का विषय है कि संपूर्ण यजुर्वेद तथा संपूर्ण सामवेद का काव्यार्थ कर चुके तथा वर्तमान में अथर्ववेद का काव्यार्थ कर रहे, देहरादून के प्रसिद्ध आर्य कवि वीरेन्द्र कुमार राजपूत को उनकी कृति अथर्ववेद प्रथम भाग काव्यार्थ पर दिनांक २४ फरवरी १४ को गुगनाराम एज्यूकेशनल एंड सोशल वेल्फेयर सोसायटी, भिवानी, हरियाणा द्वारा रु ११११.०० की धनराशि सहित वर्ष २०१३ का साहित्य सम्मान प्रदान किया गया। इस ग्रन्थ का प्रकाशन वैदिक साधना आश्रम, तपोवन, देहरादून, उत्तराखण्ड ने वर्ष २०१३ में किया था। - वीरेन्द्र कुमार राजपूत

गुरुकुल हरिपुर (ओड़िशा) का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

गुरुकुल हरिपुर, उड़ीसा का चतुर्थ चतुर्वेद पारायण महायज्ञ जो दिनांक २१ अगस्त २०१३ से चल रहा था एवं वार्षिकोत्सव १०,११,१२ जनवरी २०१४ को अनेक प्रेरक उत्साहवर्धक एवं शिक्षणीय कार्यक्रमों के साथ ईश्वर की महती अनुकम्पा से सम्पन्न हुआ।

गुरुकुल के प्रधान श्री जयदेव आर्य, राजकोट, गुजरात के शुभ करकमलों से ओ३म् ध्वजोत्तोलन के साथ महोत्सव का शुभारम्भ हुआ। मंचीय कार्यक्रमों का उद्‌घाटन पूज्य स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, गुरुकुल आमसेना के द्वारा हुआ। भव्य कार्यक्रम पर गुरुकुल के कुलपति व अनेक आर्य प्रतिनिधि सभाओं के पदाधिकारीगण व आर्य प्रतिनिधि सभा आदि सम्मानीय विद्वानों, कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं नेतृवृन्दों के पावन उपस्थिति, अध्यक्षता एवं प्रेरक प्रवचनों से सम्पन्न हुआ। - दिलीप कुमार जिज्ञासु,आचार्य गुरुकुल, हरिपुर

होलिकोत्सव आयोजित

आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर के तत्वावधान में सेक्टर ५ स्थित बसन्त विहार उद्यान में होलिकोत्सव समारोहपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर श्री इन्द्रप्रकाश के पौरोहित्य में पाँच यज्ञ वेदियों पर नवसस्येष्टि यज्ञ सम्पादित हुआ। तत्पश्चात् श्री इन्द्रदेव पीयूष ने अपने मधुर कण्ठ से समीचीन भजन प्रस्तुत किए। समारोह के मुख्य वक्ता श्री अशोक आर्य ने बताया कि बसन्त ऋतु के नवधान्य गेहूँ, जौ, चना आदि को होलक या होला कहते हैं जिन्हें सर्वप्रथम इस दिन अग्निदेव को यज्ञ के माध्यम से अर्पित कर पश्चात् प्रयोग में लिए जाने के कारण इस पर्व को होलिकोत्सव या नवसस्येष्टि पर्व कहा जाता है। वैदिक संस्कृति त्यागपूर्वक किसी वस्तु को मिल बाँटकर उपभोग करने की शिक्षा देती है। प्रह्लाद का कथानक भी हमारे आज के अहंकारी राजनेताओं को शिक्षा देता है कि जनता रूपी नरसिंहावतार परम अहंकारी हिरण्यकश्यपु जैसे राजा को भी नष्ट कर देता है। इस अवसर पर डॉ. बी.आर. चौधरी, विधायक राजस्थान विधानसभा मुख्य अतिथि थे। उन्होंने आर्यसमाज के पदाधिकारियों को भव्य आयोजन हेतु साधुवाद दिया।

आर्य समाज, शाहजहाँपुर का १३७वां वार्षिकोत्सव

दिनांक ११-१३ अप्रैल तक भव्यता के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ, भक्ति संगीत तथा विद्वानों के प्रेरक प्रवचन हुए। पूज्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती वेदभिक्षु, डॉ. निष्ठा वेदालंकार, पंडित प्रभात कुमार आर्य, भजनोपदेशक के उपादेय सम्बोधनों ने सभी को प्रेरित किया। - राजेश कुमार आर्य, मंत्री

नि:शुल्क विकलांग विवाह समारोह सम्पन्न

वैदिक परिणय सामाजिक सेवा संस्थान द्वारा यह अनूठा आयोजन ८वीं बार इन्दौर में रखा गया। कार्यक्रम संयोजक बालकराज सबलोक के अनुसार इस सम्मेलन में १८० युवक एवं ३५ युवतियाँ सम्मिलित हुए। ५ जोड़ों का सम्बन्ध तय हुआ।

विवाह संस्कार पूर्ण वैदिक विधि से पंडित पवन शास्त्री, पंडित धर्मेन्द्र शास्त्री, पंडित वेदकुमार शास्त्री ने कराया। - आचार्य भानुप्रताप, इन्दौर

आर्य वीरांगना दल शिविर का दिनांक १८ मई से २५ मई २०१४ तक अलवर में आयोजन

महिलाओं में आत्मविश्वास, निजी सुरक्षा-प्रशिक्षण, स्वसंस्कृति की श्रेष्ठता व सद्‌गुणों की स्थापना हेतु उक्त शिविर का आयोजन, आर्य कन्या विद्यालय, अलवर में किया जा रहा है। शिविर में जूड़ो-कराटे, लाठी एवं शस्त्र-संचालन, योगासन, प्राणायाम, संध्या, यज्ञ एवं बौद्धिक प्रशिक्षण दिया जायेगा। प्रवेश शुल्क ५००.०० रु. देकर तुरन्त पंजीकरण करावें।

- संयोजक- सरोज वर्मा, संचालिका आर्य वीरांगना दल, राजस्थान प्रदेश

महर्षि दयानन्द बोधोत्सव मनाया

आर्य समाज द्वारा महिला शिक्षण केन्द्र, शाहपुरा में दयानन्द बोधोत्सव पर्व मनाया गया। अध्यक्षता कन्हैयालाल आर्य ने की तथा मुख्य अतिथि डॉ. जितेन्द्र शास्त्री एवं विशिष्ठ अतिथि कल्याणमल मून्दड़ा, वरिष्ठ नागरिक मंच व अध्यक्ष रामस्वरूप काबरा थे।

मुख्य अतिथि डॉ. जितेन्द्र शास्त्री ने पर्व की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज का पर्व सत्य के मण्डन एवं असत्य के खण्डन का है। महर्षि दयानन्द ने असत्य, पाखण्ड, रूढ़िवादिता, कुरीतियों का खण्डन किया। -मंत्री,आर्य समाज, शाहपुरा

हलचल

श्री महेश सोनी जी का स्तुत्य प्रयास

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अनेक आकर्षक प्रकार से प्रचारित करने का प्रयास न्यास द्वारा किया जाता है। 'बाल सत्यार्थ प्रकाश परीक्षा', 'सत्यार्थ दूत पुरस्कार', 'सत्यार्थ प्रकाश ऑन लाइन परीक्षा' सत्यार्थ-सारथी आदि कुछ ऐसे ही प्रकल्प हैं। आवश्यकता है कि आर्य भाई बहिन अधिकाधिक इनमें भाग लें तथा अन्यों को प्रेरित करें। सभी में पारितोषिक तो है ही।

नवीनतम प्रयास के रूप में 'सत्यार्थ प्रकाश पहेली' सत्यार्थ सौरभ के माध्यम से आरम्भ की गई है। जिसमें प्रथम १० सही प्रविष्टियों पर एक वर्ष हेतु 'सत्यार्थ सौरभ' निःशुल्क प्रेषित की जायेगी। अगर विजेताओं के पास सत्यार्थ सौरभ आ रही है तो वे अपने परिचित का पूर्ण पता भेज हमारे माध्यम से सुन्दर बौद्धिक उपहार उन्हें भेजने में निमित्त बन सकते हैं। महेश सोनी जी ने ५० भाई बहिनों को प्रेरित कर प्रविष्टि भिजवायी है। उनका हृदय से आभार। - नवनीत आर्य

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस पर राजस्थान सरकार की प्रशंसनीय पहल

महर्षि दयानन्द के आदर्श को मूर्तरूप देते हुए मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे ने प्रदेशवासियों को शुभकामना के साथ आह्वान किया कि स्वामी दयानन्द महान् चिन्तक व समाज के सुधारक थे। उन्होंने समाज की कुरीतियों व बुराइयों से मुक्ति का मार्ग दिखाया व प्रगति का संदेश दिया जो आज भी प्रासंगिक है। उनके आदर्श प्रेरक व अनुकरणीय हैं। उन्होंने इस अवसर पर अनेक कैदियों की सजा कम की व अनेकों को प्रकरणानुसार कैदमुक्त किया।

जयपुर नगर व प्रान्त की सभी आर्य समाजों ने इस पहल पर साधुवाद तथा सराहना प्रस्ताव पारित किए। आर्य नेता सत्यव्रत सामवेदी ने राजस्थान सरकार के इस कदम को स्वर्णाक्षरांकित बताते हुए आर्य जगत् की ओर से आभार व्यक्त किया। -ईश्वर दयाल माथुर, जयपुर

भव्य वैदिक विरक्त सम्मेलन सम्पन्न

वैदिक मिशन, मुम्बई के तत्वावधान में दिनांक २२ व २३ मार्च २०१४ को आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासियों, शीर्षस्थ नेताओं व

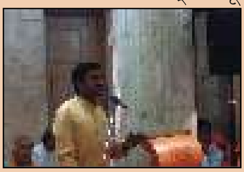

अग्रगण्य विद्वानों के सान्निध्य में यह प्रेरणादायक सम्मेलन सम्पन्न हुआ। ऋषि दयानन्द की वृहत्त्रयी के प्रचार तथा सुरक्षा हेतु व्यापक विचार-विमर्श हुआ। सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर देश के कोने-कोने में सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन करने का निश्चय किया गया। आगामी ११ सम्मेलन स्थलों की घोषणा भी की गयी। इस प्रेरक आयोजन की पूर्ण सफलता का श्रेय वैदिक मिशन के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री तथा उनके युवा कार्यकर्त्ताओं को जाता है। भूरिशः धन्यवाद। - अशोक आर्य

आर्यवीर दल, राजस्थान का प्रान्तीय योग-व्यायाम प्रशिक्षण व व्यक्तित्व निर्माण शिविर २४ मई से १ जून २०१४ तक विद्या कॉलेज, पालड़ी (भीलवाड़ा) में मनाया जा रहा है। - विजय यार्मा, शिविर संरक्षक

(विस्तृत समाचार अगले अंक में)

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास तथा महर्षि दयानन्द विद्यालय, फतहनगर के संयुक्ततत्वावधान में मई मास में वैदिक संस्कृति प्रशिक्षण शिविर का आयोजन फतहनगर में किया जावेगा। (विस्तृत समाचार अगले अंक में)

प्रतिस्वर

मान्यवर! महर्षि दयानन्द के अमर संदेश को प्रसारित करने हेतु न्यास द्वारा सराहनीय कार्यकलाप निरन्तर चल रहे हैं। उसी क्रम में एक छोटा-सा आग्रहपूर्ण सुझाव प्रेषित है।

इसी वर्ष से प्रतिवर्ष जनवरी माह में एक सुन्दर वार्षिक तिथि कलेण्डर सामान्य मूल्य पर प्रचारार्थ तैयार किया जावे जिसमें प्रतिमाह अंग्रेजी महीने व तारीख के साथ-साथ भारतीय मास के नाम, तिथि एवं त्यौहार पर्व भी अंकित हों। इसके अतिरिक्त आर्य समाज के नियम तथा वेदोक्त तथा सत्यार्थप्रकाश की चुनी हुई समयोपयोगी लोक कल्याणकारी सूक्तियाँ भी अवश्य अंकित हों। - रा.ना.चौधरी, शाजापुर

मैं आपकी मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का नियमित एवं वार्षिक सदस्य हूं। आपकी पत्रिका नियमित मिल रही है। इसके लिए आपका धन्यवाद। आप पत्रिका में पाठकों के लिए काफी ठोस एवं महत्वपूर्ण सामग्री दे रहे हैं। इस पत्रिका का आर्य जगत् की तमाम पत्र पत्रिकाओं में अपना स्थान है। न मिलने पर पुनः अंक भेजने के लिए धन्यवाद। -रामकुमार आर्य, हरियाणा

आर्यसमाज नेमदारगंज, नवादा बिहार की सक्रिय महिला कार्यकर्ता श्रीमती गीता देवी आर्या पत्नी श्री किशोरी लाल आर्य का आकस्मिक निधन २४.१.१४ को हो गया। आपके निधन से आर्य समाज नेमदारगंज की अपूरणीय क्षति हुई। २६.१.१४ के साप्ताहिक कार्यक्रम के उपरांत परमपिता परमात्मा से आत्मा की सद्गति एवं परिवार को सम्बल प्रदान करने की याचना एवं श्रद्धांजलि दी गई। - सत्यदेव आर्य 'मरुत'

चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न

आर्य समाज, अकोला द्वारा संचालित डी.ए.वी. इंग्लिश स्कूल में दिनांक २७,२८ व २९ दिसम्बर २०१३ को चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में वैदिक विद्वान् स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक, दर्शनाचार्य द्वारा स्कूल के छात्र-छात्राओं तथा शिक्षकवृन्दों को जीवात्मा, परमात्मा एवं प्रकृति इस विषय पर सरल भाषा में बहुमूल्य मार्गदर्शन किया गया। आर्यसमाज एवं स्कूल प्रधाना डॉ. मंजुलता जी विद्यार्थी ने मांसाहार की विभीषिका पर विस्तार से मार्गदर्शन किया। शिविर का समापन स्कूल के सचिव डॉ. दिलीप मानकर जी ने किया। - मंत्री आर्य समाज, अकोला

ऋषिबोधात्सव मनाया गया

परमात्मा कल्याणस्वरूप और कल्याण करने वाला होने से इनका नाम शिव है। महर्षि दयानन्द ने इसी सच्चे शिव के दर्शन हेतु रातभर जागरण भी किया, किन्तु चूहों को मूर्ति पर उछल-कूद करते देख बोध हुआ कि जिसकी पूजा करनी है वह सच्चा शिव तो यह नहीं है। वे सच्चे शिव और मृत्यु के सत्य को जानने के लिए हिमालय की घाटियों में भटकते रहे। अन्ततः वेदों के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि परमात्मा निराकार, अजन्मा, अनन्त, अनादि, अजर, अमर, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। ये शब्द अपने उद्बोधन में वेदज्ञ श्री कृष्णलाल आर्य ने महर्षि दयानन्द मार्ग स्थित आर्यसमाज में ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर कहे।

मंत्री महेश सोनी ने संचालन करते हुए सत्यार्थप्रकाश-महिमा का दिग्दर्शन कराया। वरिष्ठ उपप्रधान श्री रामेश्वर लाल आर्य और उपस्थितजनों ने महर्षि दयानन्द जयन्ती के अवसर पर कैदियों को छोड़ने और हजारों कैदियों की सजा कम करने की सराहना की तथा मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे को इस पुनीत कार्य के लिए धन्यवाद दिया। - महेश सोनी, मंत्री, आर्यसमाज बीकानेर

विश्व गौरैया दिवस
२० मार्च पर
विशेष

लौट आओ नन्ही गौरैया

आकांक्षा यादव

प्रसिद्ध पक्षी विज्ञानी सलीम अली अकसर यह जुमला दोहराया करते थे कि 'पक्षी हमारे पर्यावरण के थर्मामीटर हैं, उनकी चहचहाहट बताती है कि धरती प्रसन्न है।' तभी तो कभी घर के आँगन में गौरया, मैना और बुलबुल जैसे पक्षियों की चहचहाहट सुनायी देती थी। कोयल की कू-कू मन को भाती थी तो कौए की काँव-काँव दूर बसे किसी अपने रिश्तेदार या इष्ट मित्र के आने की खबर देती थी। अमरूद के पेड़ पर इस डाली से उस डाली उछल कूद करता हुआ तोता पेड़ के हर फल में चोंच मारता अपनी ही धुन में मगन रहता था और उसकी हर जूठन को बड़े प्यार से खाते और उसकी अठखेलियों को अपलक निहारते बच्चों व बड़े-बूढ़ों के होठों पर बरबस मुस्कान फैल जाती। मोर नाच-नाच कर बारिश आने का संदेश देता था।

पर वक्त के साथ बहुत कुछ बदल गया है। पक्षियों की तमाम प्रजातियाँ आज विलुप्त होने के कगार पर हैं। गौरतलब है कि दुनिया में पक्षियों की लगभग ६६०० प्रजातियाँ ज्ञात हैं और उनमें से १८६ प्रजातियाँ विलुप्ति के कगार पर हैं। भारत में जिन पक्षियों के अस्तित्व पर खतरा है, उनमें मोर, गौरैया, तोता, उल्लू, सारस, गिद्ध, साइबेरियाई सारस, सोन चिरैया (ग्रेट इंडियन बस्टर्ड), हिमालयन बटेर, बंगाल फ्लोरिकन, गुलाबी सिर वाली बत्तख इत्यादि शामिल हैं। पक्षी जहाँ जैव विविधता की कड़ी हैं, वहीं हमारी फूड-चेन का एक जरूरी हिस्सा भी हैं। इनके अभाव में प्रकृति का पूरा सन्तुलन ही गड़बड़ा रहा है।

याद कीजिए, अंतिम बार आपने गौरैया को अपने आँगन या आसपास कब चीं-चीं करते देखा था? कब वो आपके पैरों के पास फुदक कर उड़ गई थी? सवाल जटिल है, पर जवाब तो देना ही पड़ेगा। गौरैया सिर्फ एक चिड़िया का नाम नहीं है, बल्कि हमारे परिवेश, साहित्य, कला, संस्कृति से भी उसका अभिन्न संबंध रहा है। आज भी बच्चों को चिड़िया के रूप में पहला नाम गौरैया का ही बताया जाता है। साहित्य, कला के कई पक्ष इस नन्ही गौरैया को सहेजते हैं, उसके साथ तादात्म्य स्थापित करते हैं। घरों में धार्मिक कार्यक्रम और समारोह में दीवारों पर चित्रकारी करने में फल-पत्ती, पेड़ के साथ गौरैया के चित्र उकेरे जाते हैं। यहाँ तक कि कई आदिवासी लोक कथाओं में गौरैया का वर्णन मिलता है। महाराष्ट्र की वर्ली और उड़ीसा की सौरा आदिवासियों की लोक कलाओं में गौरैया के चित्र बनाने की प्राचीन परम्परा रही है। कई प्रसिद्ध लेखकों एवं कवियों ने गौरैया पर आधारित रचनाएँ भी रची हैं। 'अपनी गौरैया' नामक कहानी में प्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा ने कामना की है कि हमारे शहरी जीवन को समृद्ध करने के लिए गौरैया फिर लौटेगी।

जैव-विविधता के संरक्षण के लिए भी गौरैया और तमाम पक्षियों का होना निहायत जरूरी है। बालमन के पारखी पंडित जवाहर लाल नेहरू अक्सर कहा करते थें कि- 'चिड़ियों को दूर से ही देख लेना और आनन्द का अनुभव करना काफी नहीं है। अगर हम उन्हें पहचानें, उनके नाम को जानें और उन्हें चहचहाते सुनकर पहचान सकें, तो हमारा आनन्द और बढ़ जायेगा। अगर हम चिड़ियों के साथ हिलमिल जाएँ तो वे हर जगह हमारी दोस्त हो सकती हैं।'

गौरैया, वास्तव में एक सामाजिक जीव है और इसे मनुष्यों की संगति पसन्द है। कभी गौरैया घर परिवार का एक अहम् हिस्सा होती थी। हाउस स्पैरो के नाम से मशहूर गौरैया का वैज्ञानिक नाम 'पेसर डोमिस्टिकस' है, जो विश्व के अधिकांशतः भागों में पाई जाती है। इसके अलावा सोमाली, सैक्सुएल, स्पेनिश, इटेलियन, ग्रेट, पेगु, डेड सी स्पैरो इसके अन्य प्रकार हैं। भारत में असम घाटी, दक्षिणी असम के निचले पहाड़ी इलाकों के अलावा सिक्किम और देश के प्रायद्वीपीय भागों में बहुतायत से पाई जाती हैं। गौरैया पूरे वर्ष प्रजनन करती है, विशेषतः अप्रैल से अगस्त तक। दो से पाँच अंडे वह एक दिन में अलग-अलग अन्तराल पर देती है। नर और मादा दोनों मिलकर अंडे की देखभाल करते हैं। अनाज, बीजों, बैरी, फल, चेरी के अलावा बीटल्स, कैटरपीलर्स, द्विपंखी कीट, साफ्लाइ, बग्स के साथ ही कोवाही फूल का रस उसके भोजन में शामिल होते हैं।

गौरैया आठ से दस फीट की ऊँचाई पर घरों की दरारों और छेदों के अलावा छोटी झाड़ियों में अपना घोंसला बनाती हैं।

कहते हैं कि लोग जहाँ भी घर बनाते हैं, देर-सबेर गौरैया के जोड़े वहाँ रहने पहुँच ही जाते हैं। कभी सुबह की पहली किरण के साथ घर के दालानों में ढेरों गौरैया के झुण्ड अपनी चहक से सुबह को खुशगवार बना देते थे। नन्हीं गौरैया के सानिध्य भर से बच्चों के चेहरे पर मुस्कान खिल उठती थी। घर के आँगन में फुदकती गौरैया, उसके पीछे नन्हें-नन्हें कदमों से भागते बच्चे। अनाज साफ करती माँ के पहलू में दुबक कर नन्हे परिन्दों का दाना चुगना और फिर फुर्र से उड़कर झरोखों में बैठ जाना। ये नजारे अब नगरों में ही नहीं गाँवों में भी नहीं दिखाई देते। बचपन में घर के बड़ों द्वारा चिड़ियों के लिए दाना-पानी रखने की हिदायत सुनी थी, पर अब तो हमें उसकी फिक्र ही नहीं।

प्राचीन काल से ही गौरैया को हमारे उल्लास, स्वतंत्रता, परम्परा और संस्कृति की संवाहक माना जाता रहा है। पर यह नन्ही गौरैया अब विलुप्त होते पक्षियों में शामिल हो चुकी है और उसका कारण भी हम ही हैं। गौरैया अब कम ही नजर आती है। दिखे भी कैसे, हमने उसके घर ही नहीं छीन लिए बल्कि उसकी मौत का इन्तजाम भी कर दिया। हरियाली खत्म कर कंक्रीटों के जंगल खड़े कर दिए। गगनचुम्बी इमारतें बनाने के लिए, गगन को चूमने वाले न जाने कितने परिन्दों का आशियाना उजाड़ दिया। बीते कुछ सालों से बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण, हरियाली कम होने, रहन-सहन में बदलाव, अनलेडेड पेट्रोल के इस्तेमाल से निकलने वाली जहरीली गैसें, मोबाइल टॉवरों से निकलने वाली तरंगें, जैसे कई कारणों से गौरैया और अन्य परिन्दों की संख्या कम होती जा रही है। गौरैया और अन्य पक्षियों का कम होना संक्रमण वाली बीमारियों और पारिस्थितिकी तंत्र बदलाव का संकेत है।

गौरैया घर के झरोखों में भी घोंसला बना लेती है। अब घरों में झरोखे ही नहीं तो गौरैया घोंसला कहाँ बनाए? आधुनिक घरों का निर्माण इस तरह किया जा रहा है कि उनमें पुराने घरों की तरह छज्जों, टाइलों और कोने के लिए जगह ही नहीं है। जबकि यही स्थान गौरैया के घोंसलों के लिए सबसे उपयुक्त होता है। यही नहीं खेतों में कीटनाशकों का अन्धाधुन्ध इस्तेमाल कर गौरैया का कुदरती भोजन भी खत्म कर दिया जबकि गौरैया हानिकारक कीड़ों-मकोड़ों को खाकर फसल की रक्षा ही करती थी।

भौतिकवादी जीवन शैली ने बहुत कुछ बदल दिया है। गौरैया आम तौर पर पेड़ों पर अपने घोंसले बनाती है। पर अब तो वृक्षों की अन्धाधुन्ध कटाई के चलते पेड़-पौधे लगातार कम होते जा रहे हैं। शहरीकरण के नये दौर में घरों में बगीचों के लिए स्थान नहीं है। कीटनाशकों का अन्धाधुन्ध प्रयोग तथा पेट्रोल के दहन से निकलने वाला मेथिल नाइट्रेट छोटे कीटों के लिए विनाशकारी होता है, जबकि यही कीट गौरैया के चूजों के लिए खाद्य पदार्थ होते हैं। यही नहीं, हम जिस मोबाइल पर गौरैया की चूँ-चूँ कालर ट्यून के रूप में सेट करते हैं, उसी मोबाइल टावर की तरंगे इसकी दिशा खोजने वाली प्रणाली को प्रभावित कर रही है और इनके प्रजनन पर भी विपरीत असर पड़ता है। बाबू बनारसी दास नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी लखनऊ और ब्रिटिश ट्रस्ट आर्निथोलॉजी के वैज्ञानिकों ने शोध में पाया है कि गौरैया के अंडे से जिन बच्चों को निकलने में दस से बारह दिन लगते हैं, मोबाइल टावर से निकलने वाले रेडिएशन से अंडों के भीतर बच्चों का विकास रुक जाता है और गौरैया के बच्चे अंडों से ही महीने भर बाद भी नहीं निकल पाते। फिर क्यों गौरैया हमारे आँगन में फुदकेगी, क्यों वह माँ के हाथ की अनाज की थाली से अधिकार के साथ दाना चुराएगी?

आधुनिक परिवेश में गौरैया की घटती संख्या पर्यावरण प्रेमियों के लिए चिन्ता और चिन्तन दोनों का विषय है। इधर कुछ वर्षों से पक्षी वैज्ञानिकों एवं संरक्षणवादियों का ध्यान घट रही गौरैया की तरफ गया। नतीजतन इसके अध्ययन व संरक्षण की बात शुरू हुई, जैसे कि पूर्व में गिद्धों व सारस के लिए हुआ। गौरैया के संरक्षण के लिए लोगों को जागरूक करने हेतु तमाम कदम उठाये जा रहे हैं। गौरैया को बचाने के लिए भारत की 'नेचर्स फॉरएवर सोसायटी ऑफ इंडिया' और- इको सिस एक्शन फाउण्डेशन फ्रांस' के साथ ही अन्य तमाम अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों ने मिलकर २० मार्च को 'विश्व गौरैया दिवस' मनाने की घोषणा की और वर्ष २०१० में पहली बार विश्व गौरैया दिवस मनाया गया। इस दिन को गौरैया के अस्तित्व और उसके सम्मान में रेड लेटर डे (अति महत्वपूर्ण दिन) भी कहा गया। इसी क्रम में भारतीय डाक विभाग ने ९ जुलाई २०१० को गौरैया पर डाक

टिकट जारी किए। कम होती गौरैया की संख्या को देखते हुए अक्टूबर २०१२ में दिल्ली सरकार ने इसे राज्य पक्षी घोषित किया। गौरैया के संरक्षण के लिए 'बम्बई नेचुरल हिस्ट्री सोसायटी' ने इंडियन बर्ड कंजरवेशन नेटवर्क के तहत ऑनलाइन सर्वे भी आरम्भ किया हुआ है। कई एनजीओ गौरैया को सहेजने की मुहिम में जुट गए हैं ताकि इस बेहतरीन पक्षी की प्रजातियों से आने वाली पीढ़ियाँ भी रूबरू हो सकें। देश के ग्रामीण क्षेत्र में 'गौरैया बचाओ' अभियान के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए रेडियो, समाचार पत्रों का उपयोग किया जा रहा है। कुछेक संस्थाएँ गौरैया के लिए घोंसले बनाने के लिए भी आगे आई हैं। इसके तहत हरे नारियल में छेद कर, अखबार में नमी सोखकर उस पर कूलर की घास लगाकर बच्चों को घोसला बनाने का हुनर सिखाया जा रहा है। ये घोंसले पेड़ों के वी शेप वाली जगह पर गौरैया के लिए लगाए जा जा रहे हैं।

वाकई आज समय की जरूरत है कि गौरैया के संरक्षण के लिए हम अपने स्तर पर भी प्रयास करें। कुछेक नेक पहल गौरैया को फिर से वापस ला सकती है। मसलन, घरों में कुछ ऐसे झरोंखे रखें, जहाँ गौरैया घोंसले बना सकें। छत और आँगन पर अनाज के दाने बिखेरने के साथ-साथ गर्मियों में अपने घरों के पास पक्षियों के पीने के लिए पानी रखने, उन्हें आकर्षित करने हेतु आँगन और छतों पर पौधे लगाने की परम्परा जैसे कदम भी इन नन्हें पक्षियों को सलामत रख सकते हैं। इसके अलावा जिनके घरों में गौरैया ने अपने घोंसले बनाए हैं, उन्हें नहीं तोड़ने के संबंध में आग्रह किया जा सकता है। फसलों में कीटनाशकों का उपयोग नहीं करने और वाहनों में अनलेडेड पेट्रोल का इस्तेमाल न करने जैसी पहल भी आवश्यक है।

गौरैया व तमाम पक्षी हमारी संस्कृति और परम्पराओं का हिस्सा रहे हैं, लोकजीवन में इनसे जुड़ी कहानियाँ व गीत लोक साहित्य में देखने सुनने को मिलते हैं। गौरैया की कहानी, बड़ों की जुबानी सुनते-सुनते आज उसे हमने विलुप्त पक्षियों में खड़ा कर दिया है। नई पीढ़ी गौरैया और उसकी चीं-चीं को इन्टरनेट पर खँगालती नजर आती है, ऐसा लगता है जैसे गौरैया रूठकर कहीं दूर चली गई हो। जरूरत है कि गौरैया को हम मनाएँ, उसके जीवनयापन के लिए प्रबन्ध करें और एक बार फिर उसे अपनी जीवनशैली में शामिल करें, ताकि हमारे बच्चे उसके साथ किलकारी मार सकें और वह उनके साथ फुदक सके।।

टाइप-५ निदेशक बंगला
जी.पी.ओ. कैम्पस
सिविल लाइन्स, इलाहाबाद-२११००१ (उ.प्र.)

सत्यार्थ-पीयूष

गृहस्थाश्रम-वैदिक स्वर्ग की झाँकी

(सत्यार्थ प्रकाश चतुर्थ समुल्लास के आधार पर)

"घृतंदा मधुकलाः सुरोदकाः क्षीरेण पूर्णा उदकेन दध्ना।
एतास्त्वाधारा उपयन्तु सर्वाः स्वर्गेलोके मधुमत् पिन्वमाना
उपत्वा तिष्ठन्तु पुष्करिणीः समन्ताः।।"

अर्थात्- प्रकाश की सी ध्वनि वाली मधु अर्थात् ज्ञान के रक्षा साधन वाली, तत्त्व-मंथन को ग्रहण करने वाली भोजन साधन से वृद्धि, धारण पोषण सामर्थ्य से परिपूर्ण सब धारक शक्तियाँ स्वर्ग लोक में ज्ञान की पूर्णता से तुमकों सींचती हुई आदर से तुमको मिलें और पूर्ण पोषण करने वाली शक्तियाँ तुमसे उपस्थित हों।

अनस्थाः पूताः पवनेन शुद्धाः शुचयः शुचिमपियन्ति लोकम्।
नैषां शिश्नं प्रवहतिजात वेदाः स्वर्गे लोके बहुस्त्रैणमेषाम्॥

- अर्थव.४/३४/२

अर्थात्- अत्यन्त सुंदर सुगठित सुदृढ़ शरीरधारी (हड्डियों के ढाँचे मात्र न हों), पवित्र प्रेरणा एवं पवित्र आचरण वाले, प्राणायामादि क्रियाओं से स्वस्थ, श्वास-प्रतिश्वास वाले, स्नानादि क्रिया से स्वच्छ शरीर वाले, आन्तरिक वैचारिक पवित्रता से परिपूर्ण बहुत स्त्री (दादी, माता, मौसी, ताई, चाची, बहिन, बेटियाँ) वाले पवित्र गृहस्थ रूप स्वर्गलोक को जो प्राप्त करते हैं, जिनकी जननेन्द्रिय को कामाग्नि नहीं जलाती अर्थात् पूर्ण संयमी, सदाचारी मनुष्य गृहस्थाश्रम में अपने-अपने श्रेष्ठ सदाचरण तथा पवित्र क्रियाकलाप से बहुत आदर सत्कार तथा कीर्ति को प्राप्त करते हैं।

उल्लिखित दो मंत्रों में जिन पदार्थों की चर्चा है, वस्तुतः वे सभी पदार्थ गृहस्थाश्रम में प्रापणीय हैं।

स्वर्ग लोकमभि नो नयासि सं जायया सह पुत्रैः स्याम।
गृह्णामि हस्तमनु मैत्वत्र मा नस्तारीन्निर्ऋतिर्मो अरातिः॥

- अर्थव. १२/३/१७

प्रस्तुत मंत्र में यह शुभ कामना की गई है कि विद्वान् पुरुष हमको ऐसी प्रेरणा तथा पथ-प्रदर्शन करें जिससे हम लोग स्वर्ग लोक के दर्शन कर सकें। वहाँ पत्नी और पुत्र आदि पारिवारिक जनों के साथ सभी सुख सुविधाओं का उपभोग करते हुए इस प्रकार से जीवन व्यतीत करें जिससे हमारे हृदय तथा परिवार को दरिद्रता एवं कन्जूसी दबा न सके। उपरोक्त सभी बातें गृहस्थाश्रम में इसी धरा पर सम्भव हैं अतः आधुनिक युग के महान् विचारक एवं वेदोद्धारक महर्षि दयानंद सरस्वती गृहस्थाश्रम को ही स्वर्ग मानते हैं।

अब प्रश्न उठता है कि क्या प्रत्येक गृहस्थाश्रम स्वर्ग है। अगर ऐसा हो तो स्वर्ग प्राप्ति अत्यन्त सरल है, बस गृहस्थ में प्रवेश करना मात्र है। स्पष्ट है कि गृहस्थाश्रम को स्वर्ग बनाने हेतु अत्यन्त कठोर मर्यादाओं व संयम की आवश्यकता है। आज लोग इस तरफ ध्यान नहीं देते इसी कारण अधिसंख्य गृहस्थ, पति-पत्नी के क्लेश, संतानों की उद्दण्डता, स्वेच्छाचारी प्रवृति, परस्पर समरसता व आदर के अभाव, घर के बुजुर्गों की अपेक्षा, विवाह की विवाह विच्छेद में परिणिति आदि की वजह से नर्क प्रतीत होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में गृहस्थाश्रम प्रवेश की योग्यताओं, गृहस्थ में करणीय कर्त्तव्यों आदि उन सभी तत्त्वों की विशेष व्याख्या की है जिनके अनुपालन से इसी धरा पर गृहस्थ के रूप में स्वर्गाश्रम की स्थापना हो सकती है।

- संपादक- अशोक आर्य

वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्य में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹ ११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी.एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रहलादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ.वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमल सूद, पाण्डाघाट

अलसी–प्रकृति का वरदान

गतांक से आगे ....

अलसी की फाइबर युक्त स्वास्थ्यप्रद रोटी:

अलसी ब्लड शुगर नियंत्रित रखती है व डायबिटीज से शरीर पर होने वाले दुष्प्रभावों को कम करती है। डायबिटीज के रोगी को कम शर्करा व ज्यादा फाइबर खाने की सलाह दी जाती है। अलसी व गेहूँ के मिश्रित आटे में (जहाँ अलसी और गेहूँ बराबर मात्रा में हो) ५० प्रतिशत कार्ब, १६ प्रतिशत प्रोटीन व २० प्रतिशत फाइबर होते हैं यानी इसका ग्लायसीमिक इन्डेक्स गेहूँ के आटे से काफी कम होता है। जबकि गेहूँ के आटे में ७२ प्रतिशत कार्ब, १२.५ प्रतिशत प्रोटीन व १२ प्रतिशत फाइबर होते हैं। डायबिटीज पीड़ित के लिए इस मिश्रित आटे की रोटी सर्वोत्तम मानी गई है।

डायबिटीज के रोगी को रिफाइंड कार्बोहाइड्रेट्स जैसे आलू, सफेद चावल, मैदा, चीनी और खुले हुए या पैकेट बंद सभी खाद्य पदार्थ, जंक फूड, फास्ट फूड, सोफ्ट ड्रिंक आदि का सेवन कतई नहीं करना चाहिये। रोज ४ से ६ बार परन्तु थोड़ा-थोड़ा भोजन करना चाहिये। सायंकालीन भोजन सोने के ४-५ घण्टे पहले ग्रहण करना चाहिये। प्याज, लहसुन, गोभी, टमाटर, पत्तागोभी, मेथी, भिण्डी, पालक, बैंगन, लौकी, आँवला, गाजर, नीबू आदि हरी सब्जियाँ भरपूर खानी चाहिये। फलों में जामुन, सेब, संतरा, अंगूर, पपीता, आम, केला आदि सभी फल खाने चाहिये। खाद्यान्न व दालें भी छिलके समेत खाएँ। छिलकों में फाइबर व महत्वपूर्ण विटामिन होते हैं। अंकुरित दालों का सेवन अवश्य करें। रोज सुबह एक घण्टा व शाम को आधा घण्टा पैदल चलना चाहिये। सुबह कुछ समय प्राणायाम, योग व व्यायाम करना चाहिये। रोजाना चुटकी भर पिसी हुई दालचीनी सब्जी या चाय में मिला कर लेना चाहिये।

सर्वविदित है कि क्रोमियम और अल्फा-लाइपोइक एसिड शर्करा के चयापचय में सहायक हैं अतः डायबिटीज के रोगी को रोज २०० माइक्रोग्राम क्रोमियम और १०० माइक्रोग्राम अल्फा-लाइपोइक एसिड लेना ही चाहिये। अधिकतर एंटी ऑक्सीडेंट कैप्स्यूल में ये दोनों तत्व होते हैं। मेथीदाना, करेला, जामुन के बीज, आँवला, नीम के पत्ते, घृतकुमारी (ग्वार पाठा) आदि का सेवन करें। एक कप कलौंजी के बीज, एक कप राई, आधा कप अनार के छिलके और आधा कप पितपापड़ा को पीस कर चूर्ण बना लें। आधी छोटी चम्मच कलौंजी के तेल के साथ रोज नाश्ते के पहले एक महीने तक लें।

डायबिटीज के रोगी को उच्च रक्तचाप, कोरोनरी आर्टरी डिजीज, हार्ट अटेक आदि की प्रबल संभावना रहती हैं। अलसी हमारे रक्तचाप को संतुलित रखती हैं। अलसी हमारे रक्त में अच्छे कॉलेस्ट्राल (HDL Cholesterol) की मात्रा को बढ़ाती है और ट्राइग्लीसराइड्स व खराब कोलेस्ट्रोल (LDL Cholesterol) की मात्रा को कम करती है। अलसी दिल की धमनियों में खून के थक्के बनने से रोकती है और हृदयाघात से बचाव करती है। हृदय की गति को नियंत्रित कर वेन्ट्रीकुलर एरिदिमया से होने वाली मृत्यु दर को बहुत कम करती है।

नेत्र रोगः-

डायबिटीज के दुष्प्रभावों के कारण आँखों के दृष्टि पटल की रक्त वाहिनियों में कहीं-कहीं हल्का रक्त स्राव और रुई जैसे सफेद धब्बे बन जाते हैं। इसे रेटीनोपेथी कहते हैं जिसके कारण आँखों की ज्योति धीरे-धीरे कम होने लगती है। दृष्टि में धुंधलापन आ जाता है। अंतिम अवस्था में रोगी अंधा तक हो जाता है। अलसी इसके बचाव में बहुत लाभकारी पाई गई है।

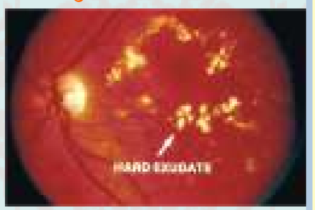

डायबिटीज के रोगी को मोतियाबिन्द और काला पानी होने की संभावना ज्यादा रहती है। आँखों में रोजाना एक बूँद अलसी का तेल डालने से हम इन तकलीफों से बच सकते हैं। इससे नजर अच्छी हो जाती हैं, रंग ज्यादा स्पष्ट व उजले दिखाई देने लगते हैं तथा धीरे-धीरे चश्मे का नम्बर भी कम हो सकता है।

डायबिटीज का बुरा असर गुर्दों पर भी पड़ता है। गुर्दों में डायबीटिक नेफ्रोपेथी नामक रोग हो जाता है, जिसकी आरम्भिक अवस्था में प्रोटीनयुक्त मूत्र आने लगता है, बाद में गुर्दे कमजोर होने लगते हैं और अंत में गुर्दे नाकाम हो जाते हैं। फिर जीने के लिए डायलेसिस व गुर्दा प्रत्यारोपण के सिवा कोई रास्ता नहीं बचता है। अलसी गुर्दे के उतकों को नयी ऊर्जा देती है। शिलाजीत भी गुर्दे का कायाकल्प करती है, डायबिटीज के दुष्प्रभावों से गुर्दे की रक्षा करती है व रक्त में शर्करा की मात्रा कम करती है। डायबिटीज के रोगी को शिलाजीत भी लेना ही चाहिये।

पैरः-

डायबिटीज के कारण पैरों में रक्त का संचार कम हो जाता है व पैरों में ऐसे घाव हो जाते हैं जो आसानी से ठीक नहीं होते। इससे कई बार गेंग्रीन बन जाती है और इलाज हेतु पैर कटवाना तक पड़ जाता हैं। इसीलिए डायबिटीज पीड़ितों को चेहरे से ज्यादा अपने पैरों की देखभाल करने की सलाह दी

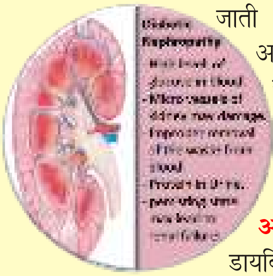

जाती है। पैरों की नियमित देखभाल, अलसी के तेल की मालिश व अलसी खाने से पैरों में रक्त का प्रवाह बढ़ता है, पैर के घाव व फोड़े आदि ठीक होते हैं। पैर व नाखून नम, मुलायम व सुन्दर हो जाते हैं।

अंतिम दो शब्दः-

डायबिटीज में कोशिका स्तर पर मुख्य विकृति इन्फ्लेमेशन या शोथ है। जब हम स्वस्थ आहार-विहार अपना लेते हैं और अलसी सेवन करते हैं तो हमें पर्याप्त ओमेगा-३ ए.एल.ए. मिलता है और हमारे शरीर में ओमेगा-३ व ओमेगा-६ वसा अम्ल का अनुपात सामान्य हो जाता है व डायबिटीज का नियंत्रण आसान हो जाता है और इंसुलिन या दवाओं की मात्रा कम होने लगती है।

अंत में डायबिटीज़ के रोगी के लिए मुख्य निर्देशों को क्रमबद्ध कर देती हूँ।

१. आपको परिष्कृत शर्करा जैसे आलू, सफेद चावल, मैदा, चीनी और खुले हुए या पेकेट बंद खाद्य पदार्थ जैसे ब्रेड, केक, पास्ता, मेगी, नूडल्स, बिस्कुट, अकंलचिप्स, कुरकुरे, पेप्सी, लिमका, कोकाकोला, फैंटा, फ्रूटी, पिज्जा, बर्गर, पेटीज, समोसा, कचोरी, भटूरा, नमकीन, सेव आदि का सेवन नहीं करना है। उपरोक्त सभी खाद्य पदार्थ मैदा व ट्रांसफैट युक्त खराब रिफाइंड तेलों से बनते हैं। तलने के लिए तेल को बार-बार गर्म किया जाता हैं जिससे उसमें अत्यंत हानिकारक कैंसर पैदा करने वाले रसायन जैसे एच.एन.ई. बन जाते हैं।

२. आपको खराब फैट जैसे परिष्कृत या रिफाइंड तेल जिसे बनाते वक्त ४०० डिग्री सेल्सियम तक गर्म किया जाता है व अत्यंत हानिकारक रसायन पदार्थ जैसे हैक्जेन, कास्टिक सोडा, फोस्फोरिक एसिड, ब्लीचिंग क्ले आदि-आदि मिलाये जाते हैं, का सेवन कतई नहीं करना है। आपको अच्छे वसा जैसे घाणी का निकला नारियल (हालांकि अमरीकी संस्था FDA ने अभी तक नारियल के तेल को सर्वश्रेष्ठ खाद्य तेल का दर्जा नहीं दिया है) , तिल या सरसों का तेल ही काम में लेना है। नारियल का तेल खाने के लिये सर्वोत्तम होता है, यह आपको दिल की बीमारियों से बचायेगा व आपके वज़न को भी कम करेगा।

३. यदि ठंडी विधि से निकला, फ्रीज में संरक्षित किया हुआ अलसी का तेल उपलब्ध हो जाये तो रोजाना दो चम्मच तेल को चार चम्मच दही या पनीर में हेंड ब्लेंडर से अच्छी तरह मिश्रण बना कर फलों या सलाद के साथ लें। अलसी का तेल हमेशा फ्रीज में रखें। ४२ डिग्री सेल्सियस पर यह खराब हो जाता है। यदि शुद्ध मिल सकता है तो आप थोड़ा घी या बटर भी काम में ले सकते हैं। हो सके तो आप सब्जियों को पानी में पकायें व बाद में तेल डालें। तली हुई चीजें कम से कम खायें।

४. रोजाना ३०-६० ग्राम अलसी का सेवन करें। इसे ताजा पीस कर ही काम में लें। अलसी पीस कर रखने से खराब हो जाती है। डायबिटीज़ के रोगी को दोनों समय की रोटी के आटे में अलसी मिलानी चाहिए। आटा मिश्रित अन्नों जैसे गेहूँ, बाजरा, जौ, ज्वार, चना और कूटू को बराबर मात्रा में मिलाकर पिसवायें।

५. आप रोज ४ से ६ बार भोजन लें परन्तु बहुत थोड़ा-थोड़ा। रात को सोने के ४-५ घण्टे पहले हल्का डिनर ले लें। आपके भोजन में सभी फल व सब्जियों का समावेश होना चाहिये। प्याज, लहसुन, गोभी, टमाटर, गोभी, पत्तागोभी, मेथी, भिण्डी, मूली, पालक, बैंगन, लौकी, आँवला, गाजर, चुकंदर, नींबू आदि सभी हरी सब्जियाँ खूब खाएँ। फलों में जामुन, सेब, संतरा, अंगूर, पपीता, चीकू, आम, केला आदि सभी फल खाएँ। फलों का रस निकालकर नहीं बल्कि पूरा छिलके समेत फल खूब चबाकर खाए। अधिकतर डायबिटीज के रोगी यह समझते हैं कि उन्हें मीठे फल नहीं खाने चाहिये। जबकि दुनिया की कोई भी चिकित्सा पद्धति नहीं कहती है कि डायबिटीज के रोगी को मीठे फल और सूखे मेवे नहीं खाने चाहिये। फलों में पर्याप्त रेशे या फाइबर जटिल शर्करायें होती हैं जिनका ग्लाइसीमिक इन्डेक्स कम होता है अतः ये रक्त शर्करा की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ाती हैं। दालें भी छिलके समेत खाएँ। छिलकों में फाइबर व महत्वपूर्ण विटामिन होते हैं। अंकुरित अन्न का सेवन अवश्य करें।

६. रोज सुबह एक घण्टा व शाम को आधा घण्टा घूमना है। सुबह आधे घण्टे से पौन घंटे, प्राणायाम, योग व व्यायाम करना है।

७. रोजाना आधा चम्मच पिसी हुई दालचीनी सब्जी या चाय में डालकर लें। रोज एक क्रोमियम व एल्फालाइपोइक एसिड युक्त (ये दोनों मधुमेह उपचार में बहुत लाभ दायक है) एन्टीऑक्सीडेंट का कैप्सूल जैसे Cap- Ebiza & L और Shilajit Dabur के दो कैप्सूल सुबह शाम लेना है। मेथीं दाना, करेला, जामुन, आँवला, नीम के पत्ते आदि का सेवन करें। आजकल रोगी को अपनी रक्त शर्करा की नियमित जाँच ग्लूकोमीटर द्वारा घर पर ही करने की सलाह दी जाती है।

८. हर तीन महीनों में HbA1C टेस्ट भी करवाये। इससे पिछले तीन महीने में आपकी ब्लड शुगर नियंत्रण की स्थिति मालूम हो जाती है। साल में एक बार आँखो की जाँच (फन्डोस्कोपी), गुर्दे व यकृत के रक्त परिक्षण, ई.सी.जी. व हृदय की विस्तृत जाँच अवश्य करवायें।

९. डायबिटीज के रोगी को हमेशा अपने पास एक कार्ड रखना चाहिए जिसमें इस बात का वर्णन हो की वह डायबिटीज से पीड़ित है। डायबिटीज के रोगी को स्वास्थ्य बीमा भी करवाना चाहिये।

१०. डायबिटीज के रोगी की कभी-कभी रक्त शर्करा बहुत कम हो जाती है जिसे हाइपो-ग्लाइसीमिया या शर्करात्पता कहते हैं, जिसके लक्षण हैं- भूख लगना, घबराहट, पसीना आना, चक्कर आना, आवाज लड़खड़ाना, कमजोरी, अस्त-व्यस्तता, बेहोशी आदि। ये बड़ी भयावह स्थिति होती है। इसमें तुरन्त चीनी, कोई मीठी वस्तु जैसे बिस्किट या मिठाई खा लेनी चाहिए और तुरन्त किसी चिकित्सालय में जाकर जाँच करवा लेनी चाहिए।

साभार- नेहा सुमन

ऑफिस बॉय

कथा सरित

एक बेरोजगार व्यक्ति ने एक बड़ी कम्पनी में ऑफिस बॉय (चपरासी) के पद के लिए आवेदन किया। कम्पनी के मालिक ने उसका साक्षात्कार लिया और प्रायोगिक परीक्षा के तौर पर उसे फर्श साफ करने को कहा। तत्पश्चात् कम्पनी मालिक ने कहा कि तुम्हें इस कम्पनी में ऑफिस बॉय के लिए नियुक्त किया जाता है। तुम मुझे अपना ई-मेल एड्रेस दो ताकि तुम्हें आवेदन पत्र भरने के लिए प्रेषित कर दिया जायेगा ताकि कम्पनी के पास तुम्हारा पूरा ब्यौरा आ सके। उस व्यक्ति ने जवाब दिया कि श्रीमान् मेरे पास न तो कम्प्यूटर है और न कोई ई-मेल है। इस पर कम्पनी मालिक ने कहा कि तब मुझे खेद है मैं तुम्हें नौकरी नहीं दे पाऊँगा क्योंकि मेरे मत में जिस व्यक्ति के पास ई-मेल पता नहीं है वह मौजूद ही नहीं है।

वह बेरोजगार व्यक्ति बड़ी हताशा के साथ वहाँ से बाहर निकला उसकी जेब में केवल दस डॉलर थे। अब वह नहीं जानता था कि उसे क्या करना है? अन्ततोगत्वा उसने निश्चय किया और बाजार से थोक भाव में दस किलो टमाटर खरीद कर लाया और घर-घर जाकर उसने वे टमाटर बेचे। दो घंटे से भी कम समय में अब उसके पास बीस डॉलर थे अर्थात् उसने अपने रकम को अथवा निवेश राशि को दो घंटे में दुगुना कर लिया था। इससे उत्साहित होकर उसने उस दिन यही कार्य तीन बार किया और जब वह सायं को घर पर आया तो उसके पास साठ डॉलर थे। इस व्यक्ति ने यही कार्य करने का निश्चय किया। उसने और परिश्रम किया वह सुबह जल्दी उठता था और कार्य करने के पश्चात् देर रात घर लौटता था। धीरे-धीरे उसने पहले एक बैलगाड़ी खरीदी फिर एक ट्रक खरीदा और फिर उसका व्यापार इतना बढ़ गया कि उसके पास डिलीवरी वाहनों की कतार लग गई। पाँच साल के पश्चात् उस व्यक्ति की कम्पनी खुदरा खाद्य व्यापार के क्षेत्र में सबसे बड़ी कम्पनी के रूप में स्थापित हुई। तब उसने अपने व अपने परिवार के भविष्य के बारे में सोचना आरम्भ किया और जीवन बीमा खरीदने का विचार किया। जब एक जीवन बीमा एजेण्ट उसके पास आया तो बाचतीत होने के पश्चात् एक प्लान पर दोनों सहमत हुए। तब उस जीवन बीमा एजेन्ट ने उस व्यक्ति से उसका ई-मेल एड्रेस माँगा। व्यक्ति ने कहा कि उसके पास कोई ई-मेल एड्रेस नहीं है। एजेन्ट ने बड़े आश्चर्य के साथ पूछा कि आपके पास कोई ई-मेल नहीं है फिर भी आप इतने बड़े कारोबार के मालिक बनने में सफल हुए। मुझे बड़ा आश्चर्य है कि अगर आपके पास ई-मेल होता तो फिर क्या बन सकते थे? व्यक्ति एक सैकण्ड रुका और उसने उत्तर दिया- एक ऑफिस बॉय।

वल्लभ डोंगरा
भोपाल

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

* न्यास द्वारा ON LINE TEST प्रारम्भ।
* वर्ष में तीन बार दिया जावेगा ५१०० रु. का उपरोक्त पुरस्कार।
* आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
* विश्व भर के लोगों से इस ON LINE TEST में भाग लेने का अनुरोध।

बेवसाइट - www.satyarthprakashnyas.org

सत्यार्थप्रकाश मानक संस्करण की कतिपय विशेषताएँ-

- धर्मार्य सभा के प्रधान आचार्य विशुद्धानन्द जी मिश्र के नेतृत्व में दस विद्वानों की समिति द्वारा तैयार।
- पाठभेद की समस्या का सदैव के लिए निराकरण। मुद्रण भूलों का निराकरण कर परिशिष्ट में आधार की जानकारी भी।
- मानक संस्करण का प्रत्येक पृष्ठ उसी शब्द से प्रारम्भ व समाप्त है जैसा कि मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) में है।
- मूल सत्यार्थ प्रकाश (१८८४) सदैव के लिए पाठक के समक्ष उपस्थित रहेगा।
- सुन्दर गेटअप "५.६X९.०" पृष्ठ ६५०, वजन ६०० ग्राम, पेपर बैक।

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

३५०० रु. सैंकड़ा

शीघ्र मंगवाएँ

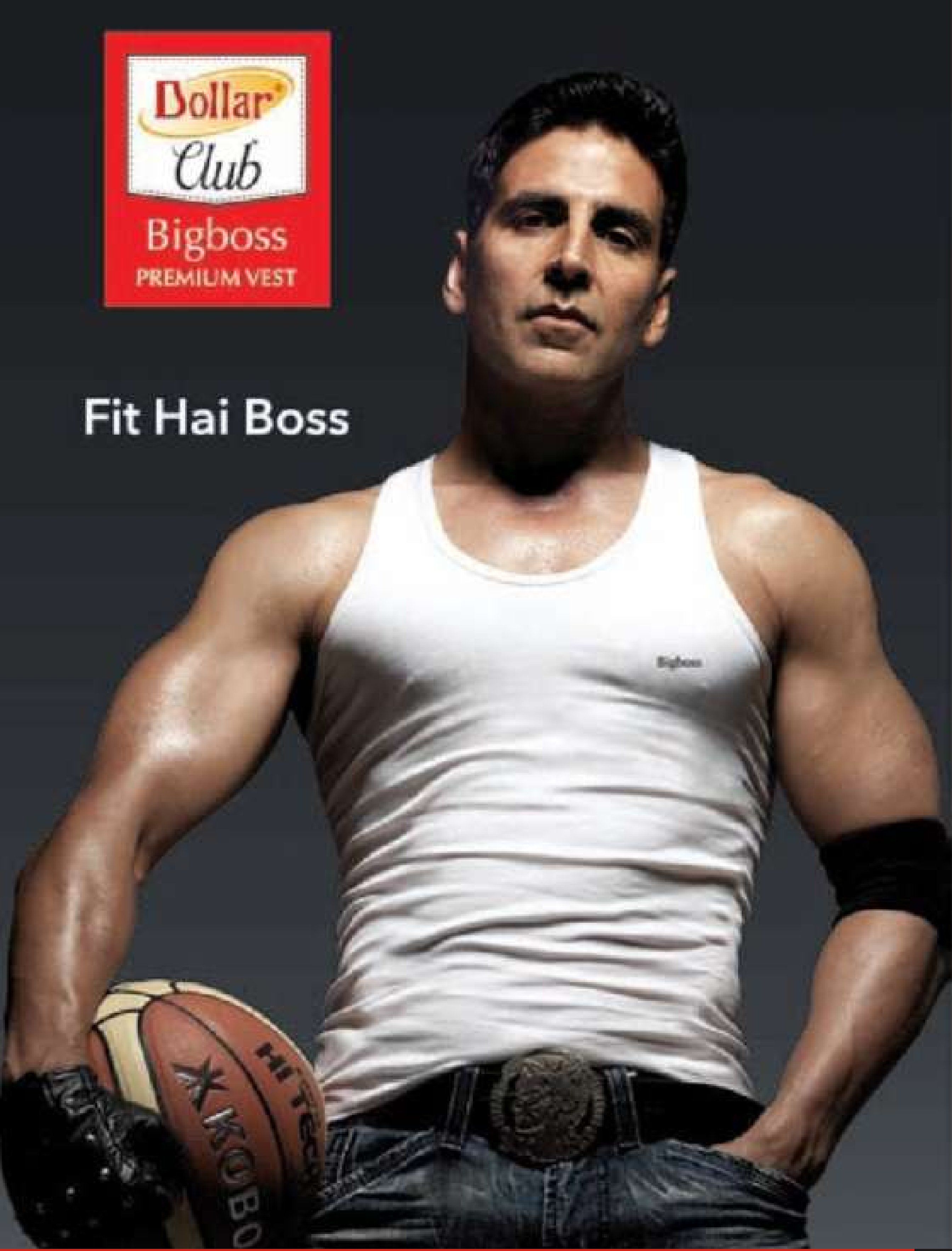
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Bigboss

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 April-2014 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2013-2015

एक अकेला सब वेदों का जाननेहारा, द्विजों में उत्तम संन्यासी जिस धर्म की व्यवस्था करे, वही श्रेष्ठ धर्म है।

सत्यार्थप्रकाश- पृ. १७०

स्वामी सुमेधानन्द बनेंगे सीकर से सांसद

आर्य समाज के सर्वमान्य संन्यासी, इस न्यास के संस्थापक सदस्य-मार्गदर्शक, गत १५ वर्षों से सीकर क्षेत्र के पिपराली में वैदिक आश्रम स्थापित कर विशेषकर युवा पीढ़ी में चरित्र-निर्माण का कार्य कर रहे हैं। आर्यसमाज को गर्व है कि ऋषि-भक्त संन्यासी को भाजपा ने सीकर से लोकसभा का चुनाव लड़ने हेतु चुना है। स्वामी जी ने यूँ तो सम्पूर्ण भारत में कार्य किया है परन्तु सीकर क्षेत्र के लोगों में आपकी लोकप्रियता देखते बनती है। इसी कारण हमें पूज्य स्वामी जी की जीत सुनिश्चित लगती है। सम्पूर्ण विश्व के आर्यजनों से इस पत्रिका के माध्यम से हम प्रार्थना करते हैं कि पूज्य स्वामी जी को तन-मन-धन से सहयोग प्रदान करें। परमपिता परमात्मा के श्री चरणों में भी एतदर्थ विनय है।

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य